याद रखिए, सबसे बड़ा अपराध अन्याय को सहना और गलत के साथ समझौता करना होता है।
- सुभाष चंद्र बोस

थियानमेन के बाद विद्रोह के डर से चीन छात्रों को पढ़ा रहा है देशभक्ति का पाठ

पास पड़ोस

हांगकांग में लोकतंत्र के लिए हो रहे प्रदर्शन और थियानमेन चौक नरसंहार के तीन दशक बाद देश में विरोध से आशंकित चीन छात्रों को राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ा रहा है।

द वाशिंगटन पोस्ट
एना फिफील्ड

थियानमेन चौक पर विद्रोह और सोवियत रूस के विघटन के तीन दशक बाद चीन का साम्यवाद करवट ले रहा है। वर्ष 1989 में थियानमेन चौक पर लाखों चीनी स्वतंत्रता के लिए सड़कों पर उतरे थे। इनमें ज्यादातर छात्र थे। उस वक्त चीन की आर्मी ने आंदोलन को कुचलने के लिए टैंक तक सड़कों पर उतार दिए थे।

इस नरसंहार में दस हजार से अधिक लोगों की मौत हो गई थी। हांगकांग में जारी प्रदर्शन से डरे चीन ने अब युवाओं को राष्ट्रीय गौरव और पार्टी के प्रति निष्ठा पैदा करने के लिए देशभक्ति का पाठ पढ़ाना शुरू कर दिया। शी जिनपिंग के पार्टी को नियंत्रण में लेने के बाद सात वर्षों में इन प्रयासों में तेजी आई है। इसका दूसरा पक्ष ये है कि ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़ मरोड़कर पेश किया जा रहा है। चीन को पश्चिमी और जापानी दुश्मनों के निर्दोष शिकार के रूप में चित्रित किया गया है। देशभक्ति के इस पाठ्यक्रम में अमरीका-चीन व्यापार युद्ध का भी उल्लेख है, जिसमें अमरीका की छवि को शत्रु की तरह बताई गई है। सरकार ने प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों के छात्रों को पार्टी, देश और लोगों से प्रेम करने का सबक सिखाने के निर्देश दिए गए हैं।

बीजिंग के डेंगशिकोउ एलीमेंट्री स्कूल में बच्चों ने देशभक्ति और पारंपरिक चीनी संस्कृति दिखाने वाला 'लिटिल रेड आर्मी' नाटक का प्रदर्शन किया।

हांगकांग पर भाषा और संस्कृति थोपना चाहता है चीन

चीन भले ही युवाओं को देशभक्ति का पाठ पढ़ा रहा है, लेकिन हांगकांग के प्रदर्शनों से आशंकित है। एक चीनी अकादमी का कहना है कि चीन का प्रचार तंत्र हांगकांग की स्थिति से ठीक से निपट रहा है। हांगकांग के लिए चीनी लोगों की रही सही सहानुभूति भी खत्म हो रही है। अकादमी का कहना है कि दो सिस्टम होने की बजाय हांगकांग एक देश पर ध्यान केंद्रित करे। सेटनहॉल विवि के प्रोफेसर झेंग वांग का कहना है कि चीनी नेता पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि वह कौनसी ताकत है, जिसके कारण हांगकांग में चीन का विरोध इतना मुखर हुआ। उनका कहना है कि हांगकांग के युवाओं को देशभक्ति की शिक्षा नहीं मिली, इसीलिए उनमें राष्ट्रीयता की कमी है। हालांकि चीन ने इसके काफी प्रयास किए हैं। वहां कैंटोनीज भाषी लोगों को मंदारिन भाषा सीखने के लिए बढ़ावा दिया। ब्रिटेन द्वारा सौंपे जाने के बाद हांगकांग को चीन उसपर अपनी नीतियां ही थोपता आया है।

कॉलेज छात्रों पर जोर

1989 के विरोध प्रदर्शनों में छात्रों की भूमिका को देखते हुए कॉलेज और यूनिवर्सिटीज पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। 30 विश्वविद्यालय और मंत्रालय 'शी जिनपिंग थॉट' को शैक्षिक संस्थानों तक पहुंचाने का काम कर रहे हैं। विश्लेषकों का कहना है कि तीन दशक के राष्ट्रवादी अध्ययन का नतीजा है कि आज निष्ठावान नागरिक बनकर तैयार हैं। इंटरनेट यूजर्स भी इतने राष्ट्रवादी हैं कि इसका पूरा ध्यान रखते हैं कि उनकी किसी पोस्ट से देश का अपमान न हो।

जीवन विज्ञान : वैज्ञानिक चाहते हैं कि उम्र बढ़ने से केवल बुढ़ापा ही लंबा न खिंचे। जवानी व मध्यम आयुकाल भी बढ़े। क्वालिटी ऑफ लाइफ के लिए वैदिक संस्कृति के जीवन मूल्यों - शिक्षा, परिवार, काम और सेवानिवृत्ति को भी जीवन चक्र का हिस्सा माना है।

औसत आयु बढ़ने से बुढ़ापे और जवानी में संतुलन के लिए जिंदगी की 'री-डिजाइनिंग'

स्टैनफोर्ड सेंटर ऑन लॉन्गवेटिटी ने 'द न्यू मैप ऑफ लाइफ' नामक पहल शुरू की। जिसमें इंजीनियर, जलवायु वैज्ञानिक, वित्तीय विशेषज्ञों, जीवविज्ञानी और शिक्षकों को शामिल किया है। स्टैनफोड के इस मिशन का उद्देश्य सरकारों, नियोक्ताओं, व्यापारियों, अभिभावकों और नीति निर्माताओं के लिए नई पद्धति विकसित करने के लिए प्लेटफॉर्म तैयार करना है, जो सदियों पुरानी जीवन पद्धति में विश्वास करते हैं।

द वाशिंगटन पोस्ट
विलियम मेयर
स्टैनफोर्ड के निदेशक, उम्र के अभियान से जुड़े

बीसवीं सदी में औसत जीवन प्रत्याशा में 30 वर्ष और जुड़ गए हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह नहीं मानें कि बुढ़ापा और लंबा हो गया, बल्कि जीवन स्तर में बदलाव के लिए गुणात्मक सुधार की आवश्यकता है, यानी जीवन को री-डिजाइन करने का वक्त है। कुछ लोग तो एक सदी तक जिंदा रहने की संभावनाओं से चिंतित भी हैं। 100 वर्ष जीने की इच्छा के बारे में पूछे जाने पर विचित्र प्रतिक्रियाएं सामने आईं। जैसे किसी ने कहा, मुझे लंबा जीने पर डिमेंशिया (मनोभ्रंश) से डर लगता है। यदि हम इस बात की कल्पना नहीं कर सकते कि आने वाली सदियों में संतोषजनक, व्यस्त और अर्थपूर्ण जिंदगी कैसी दिखेगी तो निश्चत ही हम ऐसी दुनिया बनाने में कामयाब नहीं हो सकते, जो हमे वहां तक ले जा सकती है। लेखक का मत है कि जीवन प्रत्याशा में वृद्धि के कारण ही उम्र के साथ तनाव बढ़ता है। प्रत्येक पीढ़ी अपने पूर्वजों के ज्ञान, बुनियादी ढांचे और सामाजिक मानदंडों के साथ तैयार की गई दुनिया में पैदा होती है। इस विरासत में मिली संस्कृति से लाभ उठाने की मानवीय क्षमता ने हमें ऐसे असाधारण लाभ प्रदान किए है, जिससे समय से पूर्व मौत के मामले नाटकीय रूप से कम हो गए। फिर भी लंबी उम्र तो बढ़ी, लेकिन संस्कृति बरकरार नहीं रही। लंबा जीवन समस्या नहीं है। समस्या यह है कि हम अपने जीवन की आधी अवधि के लिए बनाई गई संस्कृतियों में रह रहे हैं। चार दशक का सेवाकाल ज्यादातर लोगों और सरकारों के लिए अप्राप्य है। सेंटर ऑन लॉन्गवेटिटी की पहल 'द न्यू मैप ऑफ लाइफ' में विशेषज्ञ पता लगाएंगे कि 100 वर्ष की जिंदगी कैसी होगी, फिर रीमैपिंग की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। साथ ही इस पर विचार होगा कि लंबे जीवन के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, कार्य, जीवन शैली, सामाजिक रिश्ते, वित्तीय नियोजन और बाल विकास जैसे पारंपरिक मॉडल को कैसे बदला जाए?

2025 में 75 वर्ष जीवन प्रत्याशा का अनुमान है। जो 1955 में 48 वर्ष और 1995 में 65 वर्ष थी। इस वक्त 71 वर्ष है।

120 देशों के 5 अरब लोगों की जीवन प्रत्याशा 60 वर्ष से अधिक है। 16 देशों के 3 करोड़ लोगों की जीवन प्रत्याशा कम हुई।

68.5 है भारत में जीवन प्रत्याशा। दुनिया में सबसे ज्यादा 89.52 मोनाको जबकि सबसे कम जीवन प्रत्याशा 49 वर्ष चाड में है।

बुढ़ापा लंबा नहीं, युवावस्था के दिन भी बढ़ेंगे

विशेषज्ञों का मानना है कि पहले शिक्षा, फिर परिवार, काम और अंत में सेवानिवृत्ति वाले पुराने मॉडल को बदलना गलती होगी। इसकी बजाय कई अलग मार्ग होने चाहिए, जैसे जन्म से मृत्यु तक काम, शिक्षा, परिवार आदि के बीच विश्राम के लिए अंतराल होना चाहिए। इससे बढ़ापा लंबा नहीं होगा, बल्कि युवा और मध्यम आयु में विस्तार होगा। हम सभी इस बात से लेखक कहते हैं हम इस बात से सहमत थे कि ये जीवन पद्धति जीवन के सभी चरणों को पुनर्जीवित करती है, न केवल बुढ़ापे को। तेजी से ज्ञान हस्तांरण की उम्र में कामयाब होने के लिए बच्चों को न केवल पढ़ने, गणित और कंप्यूटर शिक्षा की आवश्यकता हैं, बल्कि रचनात्मक रूप से सोचने और तथ्यों पर पकड़ रखने की आवश्यकता है। उन्हें सीखने और बार-बार सीखने में आनंद ढूंढना होगा। शिक्षा युवावस्था में समाप्त नहीं होती, बल्कि हमेशा मौजूद रहती है और इसे कक्षा से बाहर भी कई रूपों में सीखा जा सकता है। छोटी कक्षा से डिग्री और फिर दुनिया की यात्रा तक।

काम के नए तरीके

काम के तरीके भी बदलने होंगे। काम के कम घंटे और फ्लेक्सिबल शिड्यूल के साथ ही काम की गुणवत्ता में सुधार करना चाहिए। जीवन के आखिरी क्षणों के लिए पैसे को बचाने की बजाय हम नए तरीकों से जोखिम उठा सकते हैं। पारंपरिक वसीयत की तुलना में पीढ़ी पहले ही धन साझा कर सकती है। हम जन्म के समय बचत खाते शुरू कर सकते हैं ताकि चक्रवृद्धि ब्याज उनके पक्ष में बना रहे। जीवन की शुरुआत से अंत तक शारीरिक फिटनेस बनाए रखना सर्वोपरि है।

इन्फो स्टोरी

रेकॉर्ड स्तर पर पहुंचा कार्बन उत्सर्जन

जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से बचने के लिए दुनिया के लगभग सभी देशों ने 2015 के पेरिस जलवायु समझौते में कार्बन उत्सर्जन को कम करने पर सहमति व्यक्त की थी। समझौते से अमरीका ने खुद को अलग कर लिया। पेरिस समझौते का उद्देश्य सदी के अंत तक वैश्विक तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री तक सीमित रखना था।

कार्बन उत्सर्जन के 5 कारक

- **20%** जीवाश्म ईंधन के प्रयोग से
- **14.6%** कोयला आधारित उद्योगों से
- **12.6%** पेट्रोलियम पदार्थों से
- **7.2%** गैसों के प्रयोग से
- **1.5%** सीमेंट उद्योगों से

37.1 अरब टन कार्बन का उत्सर्जन हुआ 2018 में, जो 2017 से तीन फीसदी अधिक रहा। औसत 33 अरब टन का औसत उत्सर्जन प्रति वर्ष होता है।

34% उत्सर्जन होने का अनुमान दूसरी ग्रीनहाउस गैसों से 2030 तक, जो 54 अरब टन co2 के बराबर होगा

250 से अधिक कोयला आधरित उद्योगों को बंद किया अमरीका ने 2010 से अब तक

ये हैं सर्वाधिक उत्सर्जन वाले देश

देश	कुल उत्सर्जन	%	आबादी
चीन	9.04 अरब	29%	1.44 अरब
अमरीका	5.0 अरब	16%	33 करोड़
भारत	2.7 अरब	7%	1.36 अरब
रूस	1.47 अरब	5%	14.5 करोड़
जापान	1.14 अरब	4%	12.6 करोड़
जर्मनी	7.30 करोड़	2%	8.35 करोड़
द. कोरिया	5.85 करोड़	2%	5.1 करोड़
ईरान	5.52 करोड़	2%	8.2 करोड़
कनाडा	5.50 करोड़	2%	3.74 करोड़
सऊदी अरब	5.31 करोड़	2%	3.42 करोड़
ब्राजील	4.50 करोड़	1%	21.10 करोड़

(% कुल उत्सर्जन में देश का हिस्सा : उत्सर्जन टन में है)

वर्ल्ड विंडो

मूल निवासियों की उपेक्षा से सुलग रहा द. अमरीका

पिछले महीने बोलीविया की रूढ़ीवादी नेता जीनी अनेज ने हाथ में बाइबल थामकर खुद को देश का नया राष्ट्रपति घोषित कर दिया। ये एक उकसाने वाली हरकत थी, इसलिए नहीं कि बोलीविया संवैधानिक रूप से धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है। बल्कि इसलिए कि बहिष्कृत राष्ट्रपति इवो मोरालेस की स्वदेशी परंपराओं का विरोध भी था। अब वहां मोरालेस के समर्थकों का विरोध प्रदर्शन हो रहा है। राजनीतिक असंतोष की आग बोलीविया ही नहीं चिली, इक्वाडोर, कोलंबिया जैसे दक्षिण अमरीकी देशों तक फैली हुई है। इसे 'लैटिन स्प्रिंग' कहा जा रहा है। सड़कों पर लोगों के विरोध ने नेताओं को राजधानी छोड़ने पर मजबूर कर दिया है। लोग आर्थिक विषमता, किराया वृद्धि और अभिजात वर्ग के भ्रष्टाचार से नाराज हैं। जिससे राजनीतिक क्रांति और भावी उथल-पुथल की आशंकाएं उमड़ने लगी हैं। लेकिन दक्षिण अमरीका की 21वीं सदी के असंतोष के बीच पुराना विरोध भी है। कुछ दक्षिण अमरीकी देशों में मूल आबादी शक्तिहीन हो रही है और अल्पसंख्यक अधिकारों से वंचित। बोलीविया और ब्राजील में वर्षों के वामपंथी शासन ने यहां के मूल समुदायों के अधिकारों का हनन किया। इस बीच इक्वाडोर और कोलंबिया में सदियों से चली आ रही भेदभाव की परंपरा के खिलाफ लोग एकजुट हो गए हैं। वामपंथी संगठनों की ओर से बुलाई गई एक दिन की हड़ताल विद्रोह में बदल गई, जो दक्षिणपंथी राष्ट्रपति इवान डुके के शासन के लिए बड़ी चुनौती बन गई। गैलप एक हालिया सर्वेक्षण में डुके की लोकप्रियता 30 फीसदी तक गिर गई। डुके पर आरोप है कि वे 50 वर्ष के संघर्ष के बाद गृहयुद्ध को समाप्त करने के लिए हुए शांति समझौते को लागू करने में विफल रहे।

(@ वाशिंगटन पोस्ट)

चीन के खौफ से परेशान उइगर मुसलमान कर रहे हैं पलायन

जर्मनी में उइगर शरणार्थियों की संख्या बढ़ी

शरणार्थी संकट

जर्मनी के सरकारी आंकड़ों इस वर्ष करीब 149 उइगरों ने शरण की मांगी है। चीन में करीब एक करोड़ उइगर हैं। इनमें से ज्यादातर शिनजियांग प्रांत में ही बसे हैं। वे जातीय और सांस्कृतिक रूप से चीनी लोगों से ज्यादा तुर्की के मुसलमानों से जुड़े हैं।

जर्मनी में शरण के लिए उइगर मुसलमानों की संख्या बढ़ गई है। जर्मनी के सरकारी आंकड़ों के अनुसार 2019 में पहले 10 महीनों में 149 उइगरों ने शरण की मांगी है, जो 2018 की तुलना में दोगुने अधिक हैं। प्रवासी मामलों का मंत्रालय बीएएमएफ का कहना है कि यहां जाति आधारित फॉर्म भरना अनिवार्य नहीं है ऐसे में अपनी इच्छा से इतने लोगों ने अपने बारे में स्पष्ट जानकारी दी है और खुद को उइगर बताया है जबकि असल में आंकड़े अधिक हैं। इसी अक्टूबर तक 803 चीनी नागरिकों ने शरण मांगी थी, इनमें से 96 फीसदी लोगों के आवेदन स्वीकार कर सुरक्षा मुहैया करा दी गई है। इन्हें विश्व में कहीं शरण नहीं मिल रही थी।

हाल ही 'चाइना केबल्स' नामक डॉक्यूमेंट लीक हो गए थे, जिनसे पता चला कि चीनी सरकार शिनजियांग प्रांत में उइगुर मुसलमानों समेत कई जातीय अल्पसंख्यकों को शिविरों में रख रही है। इसमें 10 लाख से अधिक लोग हैं। चीन सरकार पर आरोप है कि वह मुसलमानों को चीन के रंग-ढंग में ढालने के लिए अभियान चला रही है जबकि चीनी सरकार का कहना है कि ये कैंप दरअसल 'वोकेशनल ट्रेनिंग सेंटर' हैं जहां आतंकवाद एवं अलगाववाद को उखाड़ फेंकने की ट्रेनिंग दी जा रही है। चीन में करीब एक करोड़ उइगर लोगों के रहने का अनुमान है। वे जातीय और सांस्कृतिक रूप से चीन से कम और ज्यादा रूप से तुर्की के मुसलमानों से जुड़े हैं।

निर्माण के 150 वर्ष : स्वेज नहर से पूर्वी अफ्रीका, ईरान, भारत, पाकिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और अरब देशों तक व्यापार फैला

स्वेज नहर से होता है दुनिया का 10 फीसदी समुद्री व्यापार

व्यापार गलियारा

स्वेज नहर पर व्यापार भार बढ़ने के बाद 2014 में इसके समानांतर नई स्वेज नहर बनाई गई। इसकी गहराई 78 फुट है। पुरानी स्वेज नहर के 37 किमी हिस्से को भी इस दौरान और गहरा और चौड़ा किया गया।

लाल सागर से भूमध्य सागर को जोड़ने वाली स्वेज नहर के निर्माण को 150 वर्ष हो गए हैं। 1859 में फ्रांसीसी इंजीनियर फर्डीनेंड की देखरेख में शुरू हुआ नहर का काम दस वर्ष में पूरा हुआ। 1869 में इसे व्यापार के लिए खोल दिया गया था। 165 किलोमीटर लंबी और 60 मीटर चौड़ी इस नहर से दुनिया का 10 फीसदी समुद्री व्यापार होता है। स्वेज नहर से यूरोप से एशिया और पूर्वी अफ्रीका का मार्ग खुल गया, जिसे 9 हजार 550 किलोमीटर की दूरी कम हो गई। इससे पूर्वी अफ्रीका, ईरान, अरब, भारत, पाकिस्तान से लेकर ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड तक देशों के बीच व्यापार सुविधा हो गई। 1887 से पहले नहर से दिन में ही जहाज पार होते थे, लेकिन इसके बाद सुरक्षा प्रबंधों को बढ़ाने के बाद रात में भी नहर से निकासी शुरू हो गई। दिलचस्प बात ये है कि पनामा नहर से इसकी लंबाई दोगुनी होने के बावजूद इस पर पनामा के मुकाबले एक तिहाई ही खर्च हुआ था। 1866 में इस नहर को पार करने में 36 घंटे लगते थे, लेकिन अब 18 घंटे से भी कम समय लगता है। इस वक्त नहर पर मिस्र का नियंत्रण है।

1869 में शुरू हुई थी स्वेज नहर, इसे बनाने में दस वर्ष का समय लगा। नहर 165 किलोमीटर लंबी और 60 मीटर चौड़ी है।

2014 में पुरानी के समानांतर नई स्वेज नहर बनाई गई। 35 किमी लंबी इस नहर के निर्माण पर 55 हजार करोड़ रुपए की लागत आई।

क्या है स्वेज संकट

नहर का प्रबंधन पहले स्वेज कैनाल कंपनी करती थी, जिसके आधे शेयर फ्रांस और आधे तुर्की, मिस्र और अरब के थे। मिस्र और तुर्की के शेयर अंग्रेजों ने खरीद लिए। 1888 में समझौता हुआ कि इस पर किसी एक राष्ट्र की सेना नहीं रहेगी। 1904 में अंग्रेजों ने इसे तोड़ दिया और अपनी सेनाएं बैठा दी। 1947 में स्वेज कैनाल कंपनी व मिस्र के बीच तय हुआ कि अधिकार मिस्र का रहेगा। 1951 में ब्रिटेन ने मिस्र में युद्ध छेड़ दिया। लेकिन उसे पीछे हटना पड़ा। 1956 से मिस्र का नियंत्रण है।

हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू

Harvard Business Review Case Study &Tips

कर्मचारियों को काम की जिम्मेदारी लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए

ऑफिस में पक्षपात का माहौल ना बने इसके लिए क्या कर सकते हैं जानिए **हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू** से। यह भी जानिए कि प्रेजेंटेशन से पहले अभ्यास क्यों जरूरी है और बातचीत के दौरान उत्तेजित क्यों नहीं होना चाहिए?

ऑफिस में न्यायसंगत माहौल चाहते हैं तो छोटे निर्णय बहुत मायने रखेंगे

यदि ऑफिस में बराबरी की बात की जाए तो अक्सर कुछ बड़ी बातों पर ध्यान दिया जाता है- जैसे, किसका प्रमोशन हुआ या किसे ज्यादा बोनस मिला, जबकि छोटी बातों को नजरअंदाज किया जाता है। ऑफिस में होने वाले पक्षपात को दूर करने के लिए उन पलों और किस्सों को याद कर सकते हैं जिन्हें आपने पहले नजरअंदाज किया हो। सैलरी, प्रमोशन और परफॉर्मेंस को आधार ना बनाएं। विचार करें कि कर्मचारियों को कौन-से ज्ञान, कौशल और तजुर्बे की जरूरत हो सकती है? फिर देखें कि क्या हर कर्मचारी यह कर सकता है? कर्मचारियों को अपने करियर की जिम्मेदारी लेने के लिए प्रोत्साहित करें। परेशानियां आ सकती हैं क्योंकि कर्मचारियों को नहीं मालूम होता कि कौन-से अवसर महत्वपूर्ण हैं। कर्मचारियों को बताएं कि उन्हें अगले पांच से दस सालों में क्या हासिल करना है। वे ये सब अपने आप ही जान लेंगे, ऐसी उम्मीद करना गैरवाजिब है।

(10 वेज टू मिटिगेट बायस इन यॉर कंपनीज डिसिशन मेकिंग, एलिजाबेथ टिप्पिट)

प्रेजेंटेशन के दौरान बॉडी लैंग्वेज पर खास ध्यान देना चाहिए

बड़ी मीटिंग्स में बोलने के दौरान अक्सर लोग घबराते हैं। लेकिन अब इस तरह की मीटिंग्स में आत्मविश्वास के साथ बोलने के और ऑडियंस के सामने सहज बने रहने के बहुत से उपाय खोज लिए गए हैं। इसके लिए बहुत जरूरी है कि आप अपनी बॉडी लैंग्वेज पर खास ध्यान दें। लोगों की आंखों में देखकर बात करें और स्लाइड्स की तरफ कम देखें। एक-दो बार स्लाइड की तरफ देखना वाजिब है लेकिन शुरुआत में नहीं। इस दौरान अपने हाथों को फोल्ड ना करें और हर वो चीज जो आपके और आपकी ऑडियंस के बीच आ रही हो उसे हटा दें। जैसे- लैपटॉप। प्रेजेंटेशन के खास बिंदुओं को खास अंदाज में सबके सामने रखें। जैसे यदि आप किसी चीज की संख्या पर बात कर रहे हैं तो अंगुलियों पर गिनकर दिखा सकते हैं। प्रेजेंटेशन से पहले थोड़ा अभ्यास जरूर करें। जरूरत से ज्यादा समय लग जाए तो परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। आप और आपके विचार ज्यादा मायने रखते हैं।

(हाउ टू लुक एंड साउंड कॉन्फिडेंट ड्यूरिंग ए प्रेजेंटेशन, कैरगीन गैलो)

बातचीत करते हुए अपनी भावनाओं पर कैसे रखें नियंत्रण?

बातचीत भावनात्मक भी हो सकती है। खासकर जब आप अपनी सैलरी बढ़ाने की बात कर रहे हैं या अपनी टीम के लिए ज्यादा साधन और सुविधाएं मांग रहे हों। इस दौरान आप विचलित हो सकते हैं, चिंताग्रस्त हो सकते हैं या असंतुष्ट हो सकते हैं। लेकिन उत्तेजित होकर आप सफल नहीं हो सकते। इसलिए अपनी भावनाओं को नियंत्रण में रखना बहुत जरूरी है। बात करने से पहले ये विचार कर लें कि सामने वाला क्या प्रतिक्रिया दे सकता है और क्यों? जितना ज्यादा आप खुद को तैयार कर लेंगे उतना ही कम उत्तेजित होंगे। बातचीत के दौरान यदि आप परेशान होने लगें तो ठहर जाएं और इसकी वाजिब वजह पर विचार करके पहले रणनीति बना लें। बातचीत पूरी हो जाने पर अपने अंदर से हर तरह की नकारात्मक भावनाओं को बाहर कर दें और उस दौरान हुई सकारात्मक बातों पर अपना ध्यान केंद्रित करें।

(3 ऑफ द मोस्ट कॉमन चैलेंजेस वुमन फेस इन नेगोशिएशन, मारा ओलेकंस)

© 2019 HARVARD BUSINESS SCHOOL PUBLISHING CORP (DISTRIBUTED BY NEW YORK TIMES SYNDICATE)

फूड फॉर थॉट

प्रोत्साहन

प्रोत्साहन के एक शब्द या किसी प्रियजन या करीबी दोस्त के विश्वास के कारण इतिहास के पन्ने पर उल्लेखनीय सफलता की कहानियां लिखी गई हैं। अगर विश्वास करने वाली पत्नी सोफिया नहीं होतीं, तो शायद आज नैथेनियल हॉथोर्न का नाम महान साहित्यकारों की सूची में ही नहीं होता। एक दिन नैथेलियन हॉथोर्न घर लौटे और उन्होंने अपनी पत्नी को निराश होकर बताया कि उन्हें कस्टम हाउस की नौकरी से निकाल दिया गया है और वे असफल हो चुके हैं। हॉथोर्न को यह देखकर बड़ी हैरानी हुई कि पत्नी ख़ुशी से चीख़ने लगीं।

उसने विजयी अदाज़ में कहा, अब तुम अपनी पुस्तक लिख सकते हो।

हां, हॉथोर्न ने जवाब दिया, हालांकि उनका विश्वास बुरी तरह डगमगा चुका था, और जब मैं उसे लिखूंगा, तो हमारा खर्च कैसे चलेगा?

उसे आश्चर्य हुआ, जब उनकी पत्नी ने एक दराज खोलकर काफ़ी सारे पैसे बाहर निकाले।

हॉथोर्न ने हैरानी से कहा, तुम्हारे पास इतने सारे पैसे कहां से आए?

पत्नी ने जवाब दिया, मैं शुरु से ही जानती थी कि तुम बहुत प्रतिभाशाली हो। मैं जानती थी कि तुम किसी दिन अपना अमर ग्रंथ लिखोगे। इसलिए तुम मुझे घर खर्च के लिए जो पैसे देते थे, उसमें से मैं हर हफ्ते थोड़े पैसे बचा लेती थी। अब तक इतने पैसे जमा हो चुके हैं कि हमारा खर्च एक साल तक आराम से चल जाएगा।

पत्नी के इसी विश्वास के दम पर अमेरिकी साहित्य का महान उपन्यास द स्कार्लेट लेटर लिखा गया।

खुद से प्रेम करना सीखें

ओलिवर वेंडेल होम्स अमेरिका में सुप्रीम कोर्ट में चीफ जस्टिस के पद पर रहे हैं। वह अमेरिका के इतिहास में सुप्रीम कोर्ट में सबसे अधिक समय तक जज रहने वाले व्यक्ति हैं। वह 90 वर्ष की उम्र में सुप्रीम कोर्ट से रिटायर्ड हुए।

ओलिवर वेंडेल होम्स जब एक बार एक मीटिंग में गए, जहां उपस्थित सभी लोग उनसे लंबे थे।

एक दोस्त ने मजाक करते हुए कहा, 'डॉ. होम्स, मुझे लगता है कि हम बड़े लोगों के बीच आप खुद को छोटा महसूस कर रहे होंगे।'

होम्स ने जवाब दिया, 'मैं उसी तरह महसूस कर रहा हूं, जैसा बड़ी चट्टानों के बीच में हीरा करता है।'

आत्मा के लिए अमृत किताब से, मंजुल प्रकाशन

इंस्पिरेशन फ्रॉम ग्रेट पर्सनैलिटीज

▪ **नाम :** रमेश चंद्र अग्रवाल ▪ **जन्म :** 30 नवंबर 1944 ▪ **निधन :** 12 अप्रैल 2017 ▪ **इनके बारे में इसलिए पढ़ें :** देश का नंबर एक समाचार पत्र समूह- दैनिक भास्कर खड़ा किया। हिन्दी अख़बार जगत में क्रांति लाए। आजीवन एक चैंपियन की तरह डटे रहे।

15 की उम्र से कारोबार में आए, ₹5000 करोड़ का साम्राज्य खड़ा किया और हिंदी अखबार को देश का सिरमौर बनाया

दैनिक भास्कर समूह के चेयरमैन रमेशजी जब 15 साल के भी नहीं हुए थे कि तभी पिता द्वारकाप्रसाद अग्रवाल ने उन्हें पारिवारिक कारोबार में जुटा दिया। रमेशजी ने अपने काम की शुरुआत दैनिक भास्कर के डिस्पैच विभाग से की थी।

• **धीरूभाई अंबानी की कीमती सलाह:** 70 का दशक, यह उस दौर की बात है, जब भास्कर सरकारी कोटे से मिलने वाले लुगदी कागज पर छपता था। भास्कर का रंग-रूप अच्छा नहीं कहा जा सकता था। जब रमेशजी विज्ञापन एजेंसियों और कॉर्पोरेट विज्ञापनदाताओं के पास जाते थे तो वे हंसी उड़ाते थे। संदेश यह था : हमारे पास दोबारा आने से पहले अपने अख़बार की हालत सुधार लेना और प्रसार संख्या बढ़ा लेना। रमेशजी 1978 में बंबई गए। शीर्षस्थ उद्योगपति धीरूभाई अंबानी से मिलने। लौटे तो- 20 हजार रुपयों का चेक लेकर। जो उन दिनों बड़ी धनराशि थी। इससे भी ज्यादा कीमती वह सलाह थी, जो धीरूभाई अंबानी ने युवा रमेशजी को दी थी। उन्होंने कहा था- एक अच्छा व्यवसाय वही है, जो आत्मनिर्भर हो। इसे न केवल अपने खर्च निकालना चाहिए, बल्कि अपने कर्मचारियों के जीवन को भी बेहतर बनाना चाहिए। कॉर्पोरेट जगत और विज्ञापन एजेंसियों के उपहास से रमेशजी के स्वाभिमान को धक्का लगा था। उन्हें भास्कर की कॉस्मेटिक सर्जरी कर उसका रूप निखारना था। उन्होंने भोपाल के लिए पहली ऑफसेट मशीन खरीदी। आधुनिक कैमरों, कम्प्यूटर का उपयोग शुरू किया। जो बड़ी छलांग थी।

• **रीडर ही लीडर:** 1983 में इंदौर लॉन्चिंग के बाद रमेशजी अपने कजिन मनमोहन अग्रवाल को भी इंदौर ले गए। तीन महीने बाद ही उन्हें संपादकीय विभाग में भेज दिया गया। मनमोहन बताते हैं- एक बार मैंने मुख पृष्ठ पर सनसनीखेज खबर छाप दी। किसी ने रमेशजी को शिकायत कर दी। उन्होंने भोपाल से फोन करके मुझे डांट लगाई। इसी बीच, रमेशजी को उज्जैन में किसी काम से रुकना पड़ा। वहां उन्होंने लोगों को इस स्टोरी की तारीफ करते पाया। जब वे इंदौर पहुंचे, तब तक उनका सुर ही बदल गया था। कहने लगे- तुम्हे ऐसी खबरें जरूर छापनी चाहिए। उनके लिए रीडर ही लीडर था।

• **पहला बड़ा कदम:** 2 दिसंबर 1984 की रात। यूनियन कार्बाइड प्लांट में जहरीली गैस का रिसाव हुआ। पांच लाख से ज्यादा लोग इस जहरीली गैस का शिकार बन गए। भास्कर, तब भोपाल के पुराने शहर में इब्राहिम पुरा से निकल रहा था। यहां गैस का भारी असर था। कोई दूसरा मालिक होता तो तुरंत उस इलाके से निकल जाता। रमेशजी अलग मिट्टी के बने थे। वे अपने कुछ साहसी सहकर्मियों को लेकर पूरे शहर में घूमे। जब अगला दिन निकला, तो दैनिक भास्कर ही एकमात्र समाचार पत्र था, जिसके पास इस विभीषिका की प्रत्यक्षदर्शी ख़बरें थीं।

• **सूरज उगा पश्चिम से:** 1995 में रमेशजी ने मध्यप्रदेश की सीमा लांघकर राजस्थान में प्रवेश का फैसला लिया। लगभग 5 करोड़ रुपए की जमा पूंजी जयपुर अभियान पर लगा दी। यह सब कैसे हुआ? दरअसल, इसी समय एक कार लॉन्च हुई थी। खरीदारों ने इसके लिए 50 हजार रुपए की अग्रिम बुकिंग राशि जमा की थी। इसी समय रमेशजी ने खुद से सवाल किया, अगर लोग एक ऐसी कार के लिए पचास हजार रुपए देने को तैयार हैं, जिसे उन्होंने देखा तक नहीं है तो हम ऐसा अख़बार क्यों नहीं लॉन्च कर सकते।

• **भारत में नंबर 1:** जब भास्कर ने राजस्थान में वर्चस्व जमाया, तब तक रमेशजी ने एक और बड़ी चुनौती खोज ली। जब उन्होंने अपने नए रणक्षेत्र का नाम बताया, तो सबका उत्साह सातवें आसमान पर पहुंच गया : चंडीगढ़ और हरियाणा। चंडीगढ़ लोकार्पण के 27 दिन बाद ही वे हरियाणा के आसपास इलाकों में पहुंच गए। पानीपत और हिसार संस्करण लॉन्च कर दिए। डीबी में महीने में एक बार पारिवारिक मीटिंग की परंपरा है। भोपाल की एक मीटिंग में वह गुस्सा हो गए। गुजरात पर बहस होने लगी। रमेशजी ने बेटों को कहा कि तुम लोगों ने हार मानकर गुजरात की तरफ ध्यान देना बंद कर दिया है, जबकि अभी वहां विकास की भारी संभावना है। गुजरात में काम का पुनरुत्थान मैं खुद करूंगा। सभी ने कोशिश की कि वे फैसला बदल लें। लेकिन एक बार उन्होंने निर्णय ले लिया, मतलब ले लिया। कुछ ही दिनों में वह पूरे गुजरात में घूमने लगे। बाद में उन्होंने बेटों से कहा - वहां लोग तुम्हें गलत जानकारी दे रहे। उनके बेटे सुधीर कहते हैं कि 'उन्होंने गुजरात में जो नया सिस्टम लागू किया, वह इतना व्यावहारिक, उपयोगी और सफल था कि हमने उसे पूरे भारत में लागू कर दिया।'

(रमेश चंद्र अग्रवाल: दैनिक भास्कर के शिल्पकार की गाथा... किताब के चुनिंदा अंश।)

जीवन से सीख : मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता...

- मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता। ऊंचाइयों पर अगर पहुंचना है तो खूब परिश्रम करो।
- ऐसे काम करना, जिनके बारे में किसी दूसरे ने सोचा तक ना हो।
- कभी-कभार असफल होने में भी कोई बुराई नहीं है। कभी मनचाही चीज न हो, तो कोई हर्ज नहीं है। बस, अपनी गलतियों से सीखते रहो।

यह किताब बिक्री के लिए अमेजन पर हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध है।

नहाने का आनंद लेते बाघ...

अमेरिका के कोलोराडो के कीन्सबर्ग में स्थित वाइल्ड लाइफ सेंचुरी पार्क के एक पूल में क्ले, डेनियल और एंजो नामक बाघ नहाने का मजा ले रहे हैं। ये उन 39 टाइगर्स में शामिल हैं, जिन्हें ओकलाहोमा के एनिमल पार्क से बचाकर लाया गया था। अब यहां उन्हें जीवन के लिए जरूरी पर्याप्त पोषण और देखभाल मिल रही है। **फोटो - स्टीव विंटर**

लेसन्स फ्रॉम ग्रेट थिंकर्स

मार्सेल प्रुस्त

जन्म- 10 जुलाई 1871 निधन- 18 नवंबर 1922

फ्रेंच भाषा के उपन्यासकार, आलोचक और निबंधकार हैं। इनकी नॉवेल 'इन सर्च ऑफ लॉस्ट टाइम' काफी मशहूर थी।

1. चीजों को अलग नजरिए से देखना भी नई खोज करने जैसा है।
2. मनुष्य अपनी ख्वाहिशों या जरूरतों के मुताबिक चीजों को बदल नहीं सकता, लेकिन समय के साथ उसकी ख्वाहिशें बदलना शुरू हो जाती हैं।
3. जब तक हम दुःख का अनुभव पूरी तरह से नहीं करते तब तक हम उसका समाधान भी नहीं निकाल सकते।
4. ज्यादातर लोग साधारण बातों को साधारण तरीके से कहने में विफल होते हैं।
5. कभी भी चीजों की गहराई में उतरने से डरिए नहीं, क्योंकि सच हमेशा सबसे नीचे कहीं दबा होता है।

स्ट्रेटजी मैनेजमेंट

कैसे छोड़ सकते हैं बहाने बनाना

अक्सर हम किसी काम को नहीं कर पाते हैं तो व्यस्तता का बहाना बनाते हैं। बहानेबाज लोगों को कमजोर, आलसी या कायर व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। अगर हम मजबूत इच्छाशक्ति के साथ काम करें तो बहाने नहीं बनाने पड़ेंगे। प्राथमिकताएं क्रमबद्ध तय करनी चाहिए। प्राथमिकताएं मिश्रित हों तो असहज स्थिति बन सकती है। इंसान को सफलता चाहिए तो उसे असफलता का सामना करने और जोखिम उठाने के लिए तैयार रहना होता है। अपनी प्राथमिकताओं को लिखकर रखें, दोस्त से वादा करें या फिर अपने लक्ष्य को परिभाषित करें। इन बातों को ध्यान रखकर बहाने बनाने की आदत छूट सकती है और अगली बार जब किसी काम के पूरा न होने पर बहाने बनाए तो खुद से सवाल पूछें क्या ऐसा करके आप आगे बढ़ सकेंगे।

सेल्फ मैनेजमेंट

सबसे जरूरी है खुद को पहचानना

जीवन में कुछ अलग करना है तो उसके लिए भीड़ से हटकर जोश और जुनून के साथ काम करना होता है। जो लोग असफल होते हैं, उनकी असफलता का कारण भी यही होता है कि वह दूसरों के बनाए हुए रास्तों पर ही चलते जाते हैं। कुछ विशेष नहीं करते हैं। जो उनका अपना हो। कोई तस्वीर खींचने पर एक्सक्लुसिव होती है, लेकिन उस तस्वीर की यदि कॉपियां कर दी जाएं तो निश्चित ही उसका महत्व कम हो जाता है। असफलता प्राप्त करने वाला व्यक्ति अपनी हर असफलता का दोष अपनी किस्मत, बाधाओं या फिर दूसरों को ही देते हैं। कभी यह नहीं सोचते कि अपनी असफलता के लिए वह स्वयं कितने जिम्मेदार हैं और अपनी गलतियों से सीखकर योजना बनाकर वह कैसे आगे बढ़ सकते हैं। अगर हम महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टाइन की बात करें तो उन्होंने पहले से लिखी गई किताबों को ही पढ़कर संतुष्ट नहीं हुए बल्कि उन किताबों को पढ़कर कुछ अलग करने का सोचा और अपनी अलग पहचान बनाई। इसलिए खुद को रचनात्मक बनाइए और अपनी पहचान गढ़िए।

एंगर मैनेजमेंट

क्रोध से हुए नुकसान की भरपाई नहीं होती

एक लड़के को छोटी-छोटी बातों में गुस्सा आता था। उसके पिता ने उसे कीलों से भरा एक बैग देकर कहा कि जब भी तुम्हें गुस्सा आए एक कील को दरवाजे में ठोक देना। कुछ सप्ताह में लड़का अपने गुस्से पर काबू करना सीख गया। आखिर में एक दिन ऐसा आया कि उसका गुस्से पर पूर्ण नियंत्रण हो गया और उसने यह खबर अपने पिता को सुनाई। पिता ने कहा कि अब उसे हर वह कील जो उसने दरवाजे पर ठोकी थी उसे वापस निकालकर बैग में रखे। एक दिन उसने पिता को बताया कि वह दरवाजे से सारे कील निकाल चुका है। पिता ने कहा कि, तुमने बहुत अच्छा काम किया मेरे बेटे लेकिन जरा दरवाजे को देखो। अब यह पहले जैसा नहीं दिखता। ऐसा ही गुस्से में कुछ भी कहा जाए तो वह अपने घाव छोड़ देता है। माफी मांगने से सब ठीक नहीं होता। इसलिए व्यक्ति को अपने गुस्से को हमेशा काबू में रखना चाहिए।

ग्रेट स्पीचेस ऑफ द वर्ल्ड

'विफलता विकल्प भी है, ताकि खुद को तैयार कर सकें'

जब मैं आप लोगों को देखता हूं तो जिन एक दो चीजों पर मैं यकीन करता हूं उसकी पुष्टि हो जाती है। पहली बात यह कि मानव सरलता या मानवीय उपलब्धि की कोई सीमा नहीं है। दूसरी यह है कि हम सभी अनंत संभावनाओं वाले अनंत प्राणी हैं। मैंने अपना जीवन, वास्तव में जिया है और इसकी कुछ बातें मैं आपसे शेयर करना चाहता हूं।

पहला सबक यह है कि सपने आपके भविष्य की वास्तविकता है। मैंने कई साल पहले, वास्तव में बहुत गरीब समुदाय में टेक्सास के ह्यूस्टन से शुरुआत की थी। मैं एक बिखरे हुए परिवार से आया था। बहुत संघर्ष थे लेकिन किस्मत से मेरी मां शिक्षिका थी, जिन्होंने हमें उस माहौल से बाहर निकाला। वो हमें ऐसी दुनिया में ले गईं जहां हम अपने सपनों की खोज कर सके। तभी मैं जान सका कि मेरी महत्वाकांक्षाएं क्या है। उसी दौरान मैंने अपनी प्रतिभा को जाना। मैंने पाया कि मुझे विज्ञान पसंद है, अंतरिक्ष विज्ञान पसंद हैं। यही एक सबसे महत्वपूर्ण सबक है। आप भी समय निकालें और जानने का प्रयास करें कि वे कौन सी चीजें है जो आप अच्छी तरह कर सकते हैं। आपकी जन्मजात क्षमताएं क्या है।

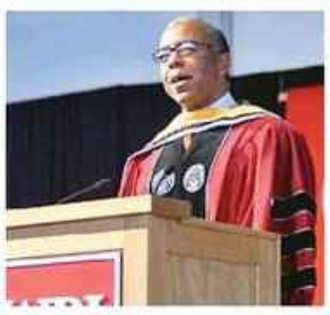

बर्नार्ड. ए हैरिस जूनियर

आपसे कुछ अपेक्षाएं हैं, आपके परिवार को आपसे कुछ उम्मीदें हैं, लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि वे अपेक्षाएं वास्तव में आप से ही आती हैं। आप दूसरों की अपेक्षाओं के आसपास अपने जीवन का निर्माण करें। इन अपेक्षाओं के साथ सावधान भी रहें, क्योंकि मुझे पता है कि इस हॉल में ऐसे छात्र भी होंगे जिन्होंने यह डिग्री केवल अपने माता-पिता के प्रोत्साहन के कारण की होगी। इस डिग्री, इस नींव के साथ यह पता लगाएं कि वह क्या है जो आप वास्तव में करना चाहते हैं।

याद रखें कि जीवन में अपने जुनून की खोज बेहद जरूरी है। जब मैं 13 साल का था तो मैंने शुरुआती स्पेस प्रोग्राम को फॉलो किया। मैंने अमेरिकी और रूसियों की एक-दूसरे से इस तरह की लड़ाई भी देखी कि कौन पहले चांद पाएगा। 1969 का वह शानदार दिन पहली बार इंसान इस ग्रह को छोड़कर दूसरे ग्रह पर गया था जिसे चंद्रमा कहा जाता है। मुझे यह देखकर मेरा जुनून मिल गया था।

मैंने यह जानने की कोशिश की कि मैं वहां कैसे पहुंचूंगा। शोध करना शुरू किए। मैंने पाया कि मैं कॉलेज नहीं जा सकता था और एक अंतरिक्ष यात्री होने के लिए मुझे एक क्षेत्र चुनना था। तो मैंने पहले मेरी प्रतिभाएं और योग्यताएं पता कीं। अन्य चीजों में से एक जिसने मुझे खूब आकर्षित किया वह चिकित्सा थी। मुझे पता चला कि स्पेस प्रोग्राम में काम करने वाले चिकित्सक थे। इस जानकारी के साथ मेरे सपने और रास्ते तय हुए और मैं कॉलेज गया।

मैं 'मायो क्लीनिक' के बाद 'नासा एम्स रिसर्च सेंटर' पहुंचा जहां मैंने फेलोशिप पर काम किया। अपनी शैक्षणिक पृष्ठभूमि के साथ मुझे यकीन आ गया कि मेरे सपनों की ओर बढ़ने का समय अब आ गया है। मैंने 1987 में एस्ट्रोनॉट कॉर्प में आवेदन किया और मुझे वहां आने का निमंत्रण मिला। मैंने इंटरव्यू दिया। कुछ महीने के इंतजार के बाद निराश करने वाला कॉल आया। उन्होंने कहा, बर्नार्ड हमें आप पसंद आए लेकिन हम इस साल आपको नहीं चुन रहे हैं। मुझे याद है इस बात से मैं बच्चों की तरह रोया, बैठा रहा। मैं हतप्रभ था कि अब मैं क्या करूंगा। मेरे पास दो विकल्प थे।

पहला विकल्प, उस फैसले को स्वीकार करना था कि मैं अंतरिक्ष यात्री बनने के लायक नहीं और अपना सपना त्याग दूं। दूसरा विकल्प था कि ठीक है, कोई बात नहीं कि उन्होंने मुझे इस बार नहीं चुना, इसलिए मैं अपना कौशल, योग्यताएं बढ़ा सकूं ताकि अगली बार वे मुझे चुन लें और मैंने ऐसा ही किया। साल 1990 में मैंने फिर आवेदन किया और मुझे चुन लिया गया।

यह कहानी आपको इसलिए बताई है कि कभी-कभी विफलता एक विकल्प है। यह मैं इसलिए कह रहा हूं क्योंकि उस विफलता ने मुझे खुद को आश्वस्त करने की अनुमति दी, उसने अनुमति दी कि मैं वापस जाऊं और अपने कौशल को बढ़ाऊं ताकि अगली बार मैं और बेहतर तरीके से खुद को पेश करूं। (2015 में वॉल्टर पॉलिटेक्निक इंस्टीट्यूट में पूर्व अंतरिक्ष यात्री बर्नार्ड ए. हैरिस जूनियर)

शून्य से शिखर तक

मंदी की मार से केवल छह माह में निकल गई थी 'भारतमैट्रीमोनी'

बात 1997 की है, जब मुरुगावेल जानकीरमन ने अमेरिका में वहां की तमिल कम्यूनिटी के लिए एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म तैयार किया था। इस पर तमिल कैलेंडर, त्योहार, भारत यात्रा और फ्लाइट बुकिंग में मदद से जुड़ी बातें शेअर हुआ करती थीं। इन्हीं तमाम सर्विस में 'मैचमेकिंग सर्विस' भी थी। वक्त के साथ उन्होंने देखा कि मैट्रीमोनिअल प्लेटफॉर्म पर लोगों का ज्यादा झुकाव है तो उन्होंने इसे पेड सर्विस बना दिया। इसकी सफलता एक मिसाल उनकी खुद की शादी है जो 1999 में उन्हीं के इस पोर्टल के जरिये हुई। यहीं से उनका यकीन इस बिजनेस में और पक्का हो गया।

ये वो दौर था जब मैचमेकिंग बिजनेस प्रिंट से डिजिटल की तरफ बढ़ रहा था। गुरुगावेल के जुनून के कारण ही निवेशक तैयार हुए और माना कि इस सेक्टर में संभावनाएं अनंत हैं। भारत-अमेरिका के तमाम चक्कर लगाने के बाद, 2004 में वे भारत लौट आए। तब 2006 में 'भारतमैट्रीमोनी' चार मिलियन डॉलर का बिजनेस था। इसी दौरान उन्हें याहू और कन्नान पार्टनर्स से 8.61 मिलियन डॉलर की फंडिंग मिली। 2008 में 12 मिलियन डॉलर की फंडिंग और आई। इसी के साथ प्रॉपर्टी, जॉब्स, ऑटोमोबाइल और मोबाइल को भी जोड़ लिया गया।

2008 में पूरे विश्व पर मंदी छाई। कंपनी के पास सीमित कैश था, इसे बचाने के लिए उन्हें अपने उन वर्टिकल्स को बंद करना पड़ा था जो फायदा देते नहीं लग रहे थे। कंपनी द्वारा केवल मैट्रीमोनी और प्रॉपर्टी को चालू रखा गया। मंदी से कंपनी को निकलने में केवल छह महीने का वक्त लगा था। अब तो कंपनी वेडिंग सर्विस बिजनेस में भी है। 3500 लोग इसमें काम करते हैं। लाख से ज्यादा 15 भाषाओं में ये सर्विस देते हैं। अल्ट्रा रिच के लिए इनकी एलीटमैट्रीमोनी सर्विस है। इसमें करीब एक लाख मेंबर्स हैं जिसमें बिलियनेअर्स, मिलियनेअर्स, सेलेब्रिटीज शामिल हैं और इसकी सब्सक्रिप्शन फीस 10 लाख रुपए सालाना तक है।

यह भी जानें

- मुरुगावेल के पिता मद्रास हार्बर पर माल ढोने का काम करते थे।
- अपने चाचा के कहने पर उन्होंने केमेस्ट्री में बीएससी की और फिर एमसीए किया, एमसीए ने ही उनका जीवन बदल दिया।

इंसुलिन के दो लाख करोड़ रु. के बाजार पर तीन कंपनियां हावी, सस्ती दवा बनाने की पहल

वैज्ञानिक खमीर से डायबिटीज की दवा ईजाद करने के नजदीक, लोग स्वयं इसे बना सकेंगे

अमेरिका में 20 दवाइयों के मूल्य कई देशों से तीन गुना अधिक इसलिए साइंटिस्ट आगे आए

ग्रांट बर्निंघम

अमेरिका में बेतहाशा महंगी दवाइयों से लोगों को राहत दिलाने के लिए कई साइंटिस्ट अपने स्तर पर काम कर रहे हैं। कैलिफोर्निया के ओकलैंड में कंप्यूटर साइंटिस्ट डी फ्रेंको का ओपन इंसुलिन प्रोजेक्ट इस खोज में बहुत आगे बढ़ चुका है। इसके प्रमुख साइंटिस्ट 33 वर्षीय फ्रांसीसी बायोकेमिस्ट यान हुओन केरमाडेक हैं। प्रोजेक्ट के साथ कई अन्य साइंटिस्ट जुड़े हैं। ये लैब में बनाए गए खमीर (यीस्ट) की एक कोशिका से इंसुलिन बना रहे हैं। प्रोजेक्ट के पीछे सोच है कि कुछ आम लोग मिलकर स्वयं इंसुलिन बना सकें।

अमेरिका में इंसुलिन सहित कई दवाइयों के मूल्य दूसरे देशों की तुलना में कई गुना ज्यादा हैं। विश्व की 20 प्रमुख दवाइयों की स्टडी में पाया गया कि ब्रिटेन की तुलना में अमेरिका में इनकी कीमतें तीन गुना अधिक हैं। दवाइयों का पेटेंट 20 वर्ष के लिए होता है। दूसरी कंपनियां जेनरिक दवाइयां बना सकती हैं। लेकिन, दवा कंपनियां फार्मूले में थोड़े फेरबदल के साथ नया पेटेंट हासिल कर लेती हैं।

इसलिए कई वैज्ञानिक सस्ती दवाइयों पर रिसर्च कर रहे हैं। दरअसल, कैलिफोर्निया के खाड़ी क्षेत्र की बायोटेक इंडस्ट्री में पुरानी लैब आसानी से कम कीमत में मिलती है। अमेरिकी सरकार ने कुछ समय पहले 19 हजार करोड़ रुपए से जीन सीक्वेंसिंग प्रोजेक्ट की शुरुआत की थी। अब दवाई की दुकान में करीब 14000 रुपए में यह टेस्ट हो जाता है। उपकरण सस्ते होने के कारण ओपन इंसुलिन प्रोजेक्ट इस काम पर आगे बढ़ सका है।

ओकलैंड स्थित काउंटर कल्चर लैब ने भी महंगी दवाइयां कम मूल्य पर उपलब्ध कराने की चुनौती हाथ में ली है। 2013 में वैज्ञानिकों और कुछ विचारकों ने बायोटेक्नोलॉजी को जनता तक पहुंचाने के लिए लैब की स्थापना की थी। इसमें एक साथ कई प्रोजेक्ट पर काम चलता है। ओपन इंसुलिन प्रोजेक्ट इससे आगे की सोच पर काम कर रहा है। वह इंसुलिन बनाने का तरीका और संबंधित निर्देश सीधे जनता को सौंपेगा। कोई भी व्यक्ति डीआईवाई लैब डालकर इंसुलिन बना सकेगा। यह प्रोजेक्ट अंतिम चरण में है।

केरमाडेक और उनकी टीम ने दो जीन सीक्वेंस लिए। इनमें से एक प्रोटीन बनाता है जिसे काटकर इंसुलिन तैयार हो सकती है। दूसरा जीन एंटीबायोटिक प्रतिरोधी यीस्ट कोशिका पैदा करता है। इनसे डीएनए का एक छोटा गोल टुकड़ा प्लास्मिड बनाया गया है। फिर एक कंपनी से प्लास्मिड की अधिक मात्रा तैयार करवाई गई। इसके बाद इन्हें ओकलैंड स्थित काउंटर कल्चर लैब भेजा। प्लास्मिड को यीस्ट कोशिकाओं में बदलकर उसमें एंटीबायोटिक घोल मिलाया गया। इस मोड़ पर एंटीबायोटिक प्रतिरोधी जीन काम आती है। जो जीन्स प्लास्मिड को अपने डीएनए में स्वीकार कर लेते हैं, वे बच जाते हैं। बाकी मर जाते हैं। अब बची कोशिकाओं से इंसुलिन वाला प्रोटीन बन सकता है।

टीम की सोच है कि वे इंसुलिन बना चुके हैं। लेकिन वे दूसरे वैज्ञानिकों के माध्यम से इसकी पुष्टि करना चाहते हैं। प्रोजेक्ट के फाउंडर डी फ्रेंको का कहना है, किसी ग्रुप के लिए लगभग सात लाख रुपए की लागत से दस हजार लोगों की जरूरत का इंसुलिन बनाने का प्रोजेक्ट शुरू हो सकता है।

(टाइम और टाइम लोगो टाइम के रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क हैं। इनका उपयोग अनुबंध के तहत किया गया है।)

ओपन इंसुलिन प्रोजेक्ट के फाउंडर डी फ्रेंको काउंटर कल्चर लैब में।

कैसे होती है डायबिटीज

जब पेनक्रियास खून की शुगर को नियंत्रित करने वाला हार्मोन इंसुलिन नहीं बनाता या व्यक्ति में हार्मोन के लिए प्रतिरोध पैदा हो जाता है तब डायबिटीज होती है। 1922 में डायबिटीज के इलाज के लिए इंसुलिन के उपयोग की शुरुआत हुई थी। डॉक्टर फ्रेडरिक बेंटिंग और मेडिकल छात्र चार्ल्स बेस्ट ने गाय के पेनक्रियास से एक तत्व निकालकर इंसुलिन बनाई थी।

पेटेंट और पेचीदा नियमों का सहारा

विश्व में एक लाख 93 हजार करोड़ रु. के इंसुलिन बाजार के अधिकतर हिस्से पर तीन कंपनियों-एली लिली, नोवो नॉरडिस्क, सनोफी-का नियंत्रण है। ये कंपनियां बाजार को अपने हाथ में रखने के लिए पेचीदा नियमों और पेटेंट का सहारा ले रही हैं। अमेरिका में पिछले 60 वर्षों में इंसुलिन के एक वायल का मूल्य 53 रु. से बढ़कर आज 17 हजार रु. से अधिक हो गया है।

दुनिया के जिन दस शहरों में सबसे अधिक निगरानी उनमें आठ चीन में हैं

चोंगकिंग शहर में निगरानी के लिए 25 लाख से अधिक कैमरे लगे हैं

वार्ली केम्पबेल

अधिकतर अमीर देशों में निगरानी का तंत्र जीवन का हिस्सा बन चुका है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से चलने वाली चेहरा पहचानने की टेक्नोलॉजी के विस्फोट ने इसे आसान बनाया है। लेकिन चीन जैसी निगरानी शायद ही किसी देश में होती है। विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था ने सामाजिक नियंत्रण का असाधारण सिस्टम खड़ा किया है। टेक रिसर्च वेबसाइट कंपेरिटेक के अनुसार दुनिया के सबसे अधिक निगरानी वाले दस में से आठ शहर चीन में हैं।

चीन के मध्य में स्थित बड़े शहर चोंगकिंग में 25 लाख से अधिक निगरानी कैमरे लगे हैं। यांगजी और जियालिंग नदी के संगम पर बसे चोंगकिंग की आबादी डेढ़ करोड़ से ज्यादा है। आबादी के हिसाब से हर 5.9 व्यक्तियों पर एक कैमरा है। चेहरा पहचानने की टेक्नोलॉजी के सॉफ्टवेयर का उपयोग दफ्तरों के भवनों, शहर के व्यस्त चौराहों की निगरानी और अपराधियों पर नजर रखने के लिए हो रहा है।

पिछले साल लंदन पुलिस ने जाने-पहचाने अपराधियों के डेटा से राहगीरों के फोटो का मिलान कर फेशियल रिकग्नीशन टेक्नोलॉजी पर आधारित पहली गिरफ्तारी की थी। कुछ माह पहले नई दिल्ली में पुलिस ने फेशियल रिकग्नीशन सॉफ्टवेयर के ट्रायल में केवल चार दिन में 3000 लापता बच्चों का पता लगा लिया था। अमेरिका में भी टेक्नोलॉजी का व्यापक उपयोग हो रहा है।

टेक्नोलॉजी के साथ कई खतरे जुड़े हैं। पश्चिमी देशों ने सरकार और कंपनियों द्वारा नागरिकों के डेटा के दुरुपयोग को रोकने के लिए कई उपाय किए हैं। दूसरी तरफ चीन एआई निगरानी टेक्नोलॉजी तानाशाह सरकारों को दे रहा है। चीनी कंपनियां वेनेजुएला, जिम्बाबवे सहित 18 देशों को हाई टेक डिवाइस दे रही हैं। चीन में आतंकवाद से लड़ने के नाम पर मुस्लिम समूहों-उईगुर, कजाख, उजबेक और किर्गिजों- को फोटो, फिंगर प्रिंट, डीएनए, खून और आवाज के सैम्पल जैसे बॉयोमैट्रिक डेटा देने के लिए मजबूर किया जाता है। मानवाधिकार समूह ह्यूमन राइट्स वाच के अनुसार इसके बाद स्मार्टफोन एप से लैस पुलिस कुछ निश्चित लक्षणों के आधार पर नजर रखती है। पश्चिमी देशों में भी डेटा दुरुपयोग के बहुत मामले सामने आए हैं।

2019 की 100 किताबें जिन्हें पढ़ा जाना चाहिए

इनमें भारतीय मूल के तीन लेखकों की पुस्तकें भी

टाइम मैग्जीन ने वर्ष 2019 की 100 पुस्तकों का संक्षिप्त ब्योरा प्रकाशित किया है जिन्हें पढ़ा जाना चाहिए। इन्हें 10 बेस्ट फिक्शन,10 बेस्ट नॉन फिक्शन, लघु कथाओं, रहस्य, इतिहास, राजनीति, अपराध, पत्रकारिता, समाज, साइंस और संस्मरण जैसे वर्गों में बांटा गया है। पेश है, दस पुस्तकों का ब्योरा।

क्विक्शोटे
• सलमान रूशदी

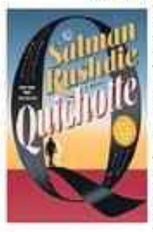

मुंबई में जन्मे चर्चित लेखक सलमान रूशदी ने एक सेल्समैन की जिंदगी को उपन्यास में पिरोया गया है। वह सोचता है कि उसे एक टेलीविजन स्टार से विवाह करना चाहिए। इस कहानी के भीतर एक अपराध उपन्यासकार की झलक भी है।

द निकेल ब्वॉय
• कोलसन व्हाइट हैड

पुलित्जर पुरस्कार विजेता ने फ्लोरिडा, अमेरिका के दो अश्वेत लड़कों के संबंध छपी खबर के आधार पर काल्पनिक खाका खींचा है। पुस्तक में दमन और प्रताड़ना को रेखांकित करने के लिए का जिक्र है।

अमेरिकन स्पाई
• लॉरेन विलकिंसन

पूर्व राष्ट्रपति ओबामा के पसंद की किताब एफबीआई की एक अश्वेत महिला एजेंट की कहानी है। उसे बुरकिना फासो के कम्युनिस्ट राष्ट्रपति को हटाने की जिम्मा सौंपा गया था।

गुड टॉक
• मीरा जैकब

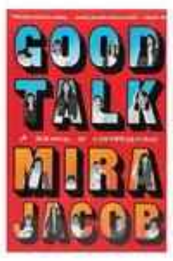

भारतीय मूल की मीरा ने अपने ग्राफिक संस्मरण में युवा बेटे द्वारा उठाए गए कुछ कठिन सवालों का जवाब दिया है। जीवन के पिछले और वर्तमान अनुभवों को सामने रखा है।

द मोमेंट ऑफ लिफ्ट
• मेलिंडा गेट्स

मेलिंडा ने लिखा है कि समाज को बेहतर बनाने का सबसे अच्छा रास्ता महिलाओं को अधिकार संपन्न बनाना है। उन्होंने उन लोगों के जीवन संघर्ष को भी उकेरा है जिनकी उन्होंने सहायता की है।

से नथिंग
• पेट्रिक राडेन कीफ

यह उत्तर आयरलैंड में 1972 में एक मां की हत्या के साथ इतिहास पर भी नजर डालती है। इसमें आइरिश रिपब्लिकन आर्मी, ब्रिटेन के कब्जे और आतंकवाद को स्पर्श किया है।

द मेमोरी पुलिस
• योको ओगवा

जापानी उपन्यासकार एक ऐसे समाज की तस्वीर सामने रखती हैं जिसमें वस्तुओं और लोगों की स्मृतियों को पुलिस बल ने चुरा लिया है।

चाइना ड्रीम
• मा जियान

2012 में चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने चाइना ड्रीम के संबंध में अपना विचार पेश किया था। यहां असंतुष्ट लेखक ने चीन के दुस्वप्न का एक व्यंगात्मक चित्र प्रस्तुत किया है।

दिस लैंड इज अवर लैंड
• सुकेतु मेहता

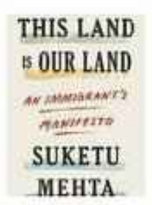

मेहता जब किशोर थे तब उनका परिवार भारत से अमेरिका आ गया था। उन्होंने लोगों के एक देश से दूसरे देश में जाने के पक्ष में कलम चलाई है।

एडिसन
• एडमंड मॉरिस

यह आत्मकथा अमेरिका के महानतम आविष्कारक थॉमस एडिसन की जिंदगी के पन्ने खोलती है।

(© 2019 Time Inc.) सर्वाधिकार सुरक्षित। टाइम मैग्जीन से अनुवादित और Time Inc. की अनुमति से प्रकाशित। पूर्व अनुमति के बिना किसी भी भाषा में पूरा या आंशिक रूप में प्रकाशित करना प्रतिबंधित। टाइम मैग्जीन और टाइम मैग्जीन लोगो Time Inc. के रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क हैं। इनका उपयोग अनुमति लेकर किया गया है।

भास्कर 360° | टेलीकॉम पर संकट | इस महीने से दाम बढ़ाने वाली हैं जियो, एयरटेल, वोडाफोन

तीन साल में पहली बार... आपकी कॉलिंग-डेटा महंगे होने की बात हो रही है, 3 माह में 30% इजाफा संभव

देश में 4जी सेवा शुरू होने के बाद से यह पहला अवसर है जब टेलीकॉम कंपनियां मोबाइल डेटा और उससे जुड़े सर्विस चार्जेज में बढ़ोतरी करने जा रही हैं। 2016 में जियो के लांच होने के बाद से छिड़े प्राइसवार के चलते ग्राहकों को अनलिमिटेड वॉइस कॉलिंग और डेटा का लाभ मिला है। लेकिन कीमतों की इस लड़ाई में नामी कंपनियां बाहर हो गईं तो कई मैदान छोड़ने की स्थिति में हैं।

भास्कर न्यूज | नई दिल्ली

तीन साल में यह पहली बार है, जबकि देश में कॉलिंग और डेटा टैरिफ बढ़ाने की बात हो रही है। 2016 में जियो के आने के बाद से अब तक तो सिर्फ कीमतों में कटौती की खबरें आई थीं। अब अचानक ऐसा क्या हो गया? क्यों टेलिकॉम कंपनियां ऐसा फैसला ले रही हैं? कॉलिंग-डेटा कितना महंगा हो सकता है? इन्हीं सवालों के जवाब भास्कर ने एक्सपर्ट्स के जरिए तलाशने की कोशिश की।

टेलिकॉम क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों का मानना है कि तीन महीनों में ही डेटा-टैरिफ तीस फीसदी तक महंगा हो सकता है। जियो, एयरटेल और वोडाफोन-आइडिया पहले ही कह चुकी हैं कि दिसंबर में वे दाम बढ़ाने वाली हैं। टेलिकॉम कंपनियों के इस संकट के मूल में एडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू (एजीआर) का विवाद छिपा है।

2005 में सेल्यूलर ऑपरेटर्स एसोसिएशन ने सरकार की इस परिभाषा को अदालत में चुनौती दी। अब इसी 14 साल पुराने केस में सुप्रीम कोर्ट का फैसला आया है। जिसमें उसने कंपनियों को 92 हजार करोड़ रुपए चुकाने का आदेश दिया है। इसी के चलते टेलिकॉम कंपनियां चिंतित हैं।

सरकार ने भी कंपनियों की मदद के लिए कमेटी बनाई, जिसके बाद कंपनियों को दो साल की मोहलत मिल गई। एजीआर का सबसे बड़ा नुकसान वोडाफोन को उठाना पड़ सकता है। इसकी वजह से वोडाफोन-आइडिया को 50,921 करोड़ रुपए का घाटा उठाना पड़ा है। जो कि कॉर्पोरेट इतिहास में अब तक सर्वाधिक है। कंपनियों की इस खस्ता हालत का असर 5जी की तैयारियों पर भी पड़ रहा है। एक अनुमान के अनुसार देश में अब 2022 से ही 5जी सब्सक्रिप्शन शुरू हो पाएंगे। इतना ही नहीं, कंपनियां 5जी स्पेक्ट्रम की कीमतों को घटाने की भी सरकार से मांग कर रही हैं।

टेलिकॉम कंपनियों के घाटे और उससे हम पर क्या असर पड़ेगा, इसे आसान भाषा में समझा रहे हैं- टेकआर्क के फाउंडर और चीफ एनालिस्ट फैजल कोसा और टेलिकॉम टॉक के अमित शर्मा।

6 बिन्दुओं में इस मुद्दे से जुड़ा वो सबकुछ जो आपको जानना चाहिए

डेटा क्रांति की तस्वीर.

यह तस्वीर सितंबर 2016 की है, जियो 5 सितंबर को लॉन्च हुआ था। जियो की 4जी स्पीड पाने के लिए इस तरह देशभर में कतारें लग गई थीं। मुफ्त डेटा पाने के लिए रात-रात भर लोग जियो टॉवर के नीचे बैठे रहा करते थे। जियो के मार्केट में आने से दूसरी कंपनियों को भी अपने दामों में कटौती करनी पड़ी थी।

1. टेलिकॉम कंपनियां दाम क्यों बढ़ा रही हैं?

एजीआर की वजह से कंपनियां घाटे में दिख रही हैं। हाल ही घोषित हुए तिमाही नतीजों में वोडाफोन-आइडिया को कॉर्पोरेट इतिहास का सबसे बड़ा घाटा हुआ है। कंपनियों को सरकार को 92 हजार करोड़ रुपए चुकाने हैं। ऐसे में वे दाम बढ़ाने की बात कर रही हैं।

कंपनियां	घाटा/मुनाफा
वोडा-आइडिया	50,921 ↓
एयरटेल	23,079 ↓
जियो	990 ↑

- स्थिति करोड़ रु. में, जुलाई-सितंबर

2. एजीआर का यह विवाद है क्या, शुरू कैसे हुआ?

1994 में टेलिकॉम सेक्टर को लिबरलाइज्ड किया गया था। कंपनियों को फिक्सड फीस के बदले लाइसेंस मिले थे। 1999 में सरकार रेवेन्यू शेयरिंग मॉडल लेकर आई। इसके तहत टेलिकॉम ऑपरेटर्स को सरकार के साथ एजीआर का एक हिस्सा और स्पेक्ट्रम यूसेज चार्ज चुकाने थे। झगड़ा इसी परिभाषा को लेकर खड़ा हुआ। टेलिकॉम कंपनियों ने इसे सिर्फ कोर सर्विस से जोड़कर देखा, वहीं सरकार ने हर तरीके के रेवेन्यू से। डिविडेन्ड से लेकर हर तरह की कमाई तक।

3. एक्सपर्ट से समझिए, हम पर क्या पड़ेगा असर ?

टेलिकॉम टॉक के अमित शर्मा के अनुसार, टेलिकॉम कंपनियां अगले तीन महीने में 30% तक की बढ़ोतरी कर सकती है। रिलायंस भी आईयूसी चार्ज शुरू कर चुकी है। उधर, टेकआर्क के फाउंडर एंड चीफ एनालिस्ट फैसल कौसा कहते हैं- कुछ ऐसी कंपनियां हैं जो एग्रेसिव प्राइसिंग करती हैं, जिससे उनके प्रतिद्वंदी या तो खत्म हो जाएं या हार मान लें। जियो ने ऐसा ही किया है। प्रतिद्वंदियों के हार मानने के बाद उसने प्राइस बढ़ाने शुरू किए हैं। एक साल में 25% तक की बढ़ोतरी कॉम्बो पैक में हो सकती है।

4. क्या जियो इफेक्ट का प्राइसवॉर पर कोई असर है?

जियो के आते ही देश ने बड़े बदलाव देखे। वित्तीय वर्ष 2008-10 में देश में 13 टेलिकॉम ऑपरेटर थे, जिनकी संख्या अब घटकर मात्र चार पर आ गई है। जियो के आने के पहले डेटा की खपत के मामले में भारत दुनिया में 155वें स्थान पर था जोकि अब पहले स्थान पर पहुंच गया है। भारत में जियो के पहले डेटा की खपत 20 करोड़ जीबी/माह थी जो बढ़कर 370 करोड़ जीबी/प्रतिमाह हो गई है। औसतन 250 रुपए प्रतिजीबी मिलने वाला डेटा अब मात्र 15/जीबी के हिसाब से मिल रहा है।

5. किस कंपनी पर सरकार का कितना एजीआर बकाया?

कंपनियां	घाटा/मुनाफा
वोडा-आइडिया	28,308 करोड़
एयरटेल	21,682 करोड़
जियो	13 करोड़

कुल **92 हजार करोड़ रु.** का बकाया है सभी टेलिकॉम कंपनियों पर

6. किस कंपनी के पास कितने ग्राहक?

कंपनियां	ग्राहक
वोडा-आइडिया	37.5 करोड़
एयरटेल	32.9 करोड़
जियो	35.5 करोड़

» पिछले साल वोडाफोन और आइडिया में मर्जर हुआ था। इसके बाद दोनों के विलय से जो नई कंपनी बनी, उसके पास पहले ही दिन कुल ग्राहकों की संख्या 43 करोड़ से ज्यादा थी।

एक रोचक फैक्ट.
देश में पहली मोबाइल कॉल 24 साल पहले

31 जुलाई, 1995 को देश की पहली मोबाइल कॉल की गई थी। यह कॉल पश्चिम बंगाल के तत्कालीन मुख्यमंत्री ज्योति बसु ने की थी। उन्होंने यह प्रतीकात्मक कॉल तत्कालीन संचार मंत्री सुखराम को किया था। यह कॉल मोदी टेलस्ट्रा के नेटवर्क पर की गई थी। इसके बाद देश में मोबाइल का दौर शुरू हुआ। 2016 में 4जी क्रांति के बाद देश में सबसे सस्ता डेटा और कॉलिंग का सिस्टम खड़ा हुआ। बता दें भारत दुनिया में सबसे सस्ती मोबाइल सेवा वाला देश है।

बीएसएनएल क्यों बर्बाद हुई, 4जी भी नहीं हो पाई

ऐसा नही है कि केवल निजी टेलीकॉम कंपनियों की ही हालत आज खराब है। देश की सबसे प्रतिष्ठित टेलीकॉम कंपनी रही बीएसएनएल आज बंदी की कगार पर पहुंच गई है। टेलीकॉम कंपनियों में सबसे अधिक 1.76 लाख कर्मचारी वाली इस सरकारी टेलीकॉम कंपनी की दुर्दशा के पीछे चार प्रमुख कारण माने जा रहे हैं।

1. कंपनी ने 4जी स्पेक्ट्रम नहीं लिया : वर्ष 2017 में बीएसएनएल ने 4जी स्पेस्ट्रम की नीलामी में हिस्सा ही नहीं लिया। जबकि उस समय सरकार ने कहा था कि उसे भी दूसरी निजी कंपनियों के दाम पर ही स्पेक्ट्रम दिए जाएंगे। बीएसएनएल को उस समय ये दाम ज्यादा लगे।

2. डेटा स्पीड, वॉइस क्वालिटी में खराबी : डेटा स्पीड, वॉइस क्वालिटी और नेटवर्क में कंपनी गुणवत्ता नहीं दे पा रही है। नेटवर्क सुधारने के लिए उसने डिपार्टमेंट ऑफ टेलीकम्युनिकेशन्स से इजाजत ली है कि बैंक से 3500 करोड़ का लोन ले सके। ये लोन उसे मिला नहीं है।

3. सैलरी में खर्च होता है राजस्व का 55 से 60% : कंपनी राजस्व का 55-60% हिस्सा कर्मचारियों की सैलेरी पर खर्च करती है। फरवरी में 850 करोड़ रु सैलेरी नहीं बांट पाई।

4. राजस्व जुटाने का विकल्प नहीं : कंपनी की देशभर में काफी जमीन है। वो इसे बेचकर कुछ पैसा जुटाना चाहती है। इसके लिए उसने प्रस्ताव वित्त मंत्रालय के विनिवेश विभाग को भेजा था। विभाग ने इस पर विचार नहीं किया है।

नियामक क्या कह रहे हैं?

ऑपरेटर्स निजी कारणों से दाम बढ़ा रहे हैं: ट्राई

ट्राई ने पिछले 16 साल में दरों को लेकर कोई बदलाव नहीं किया है। सर्विस चार्ज बढ़ाने के पीछे टेलीकॉम सर्विस प्रदाता कंपनियों के अपने निजी कारण हैं जिसके चलते वे दाम बढ़ा रही हैं। **आरएस शर्मा,** चेयरमैन ट्राई

यह विनाशकारी झटके की तरह :सीओएआई

टेलीकॉम उद्योग इस समय भारत में खराब दौर से गुजर रहा है। इस पर सुप्रीम कोर्ट का आदेश एक विनाशकारी झटके की तरह है। ऑपरेटरों की संकटपूर्ण वित्तीय स्थिति को देखते हुए इसे ताबूत में अंतिम कील कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। **राजन मैथ्यूज,** महानिदेशक सीओएआई

हर आदमी की जिंदगी में सेहत और खुशी की अहमियत होती है। सेहत और खुशी एक-दूसरे से जुड़े हैं। इन्हें साधने के लिए खानपान से जुड़ी छोटी-छोटी बातों के साथ-साथ संगीत और नींद की अहमियत को जानना और उसके प्रति लगातार जागरूक बने रहना भी जरूरी है। ऐसा करने के लिए हमें अपनी दिनचर्या में बहुत बड़े उलटफेर की जरूरत नहीं है। बस इन पर थोड़ा फोकस करने की जरूरत है और फोकस करना बहुत मुश्किल काम नहीं है। एक बार जब इसमें हम कामयाब हो जाते हैं तो हम लाइफस्टाइल को भी अच्छी तरह से मैनेज कर लेते हैं और बिना दवाई या बहुत कम दवाई के भी कई छोटी-बड़ी बीमारियों से बचे रह सकते हैं।

TBF का फॉर्म्युला

T: Thought **B: Behaviour** **F: Food**

इन तीनों के प्रति हमारा लगातार जागरूक रहना जरूरी है। इनमें बेहतर सामंजस्य और संतुलन से न सिर्फ हम शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रह सकते हैं बल्कि हमारे रिश्ते भी बेहतर बने रहते हैं। इससे हम ज्यादा खुश रहते हैं और घर-बाहर हर जगह बेहतर परफॉर्म कर सकते हैं। ज्यादातर लोग इनमें से सिर्फ एक या दो को साध पाते हैं जिससे उन्हें वह फायदा नहीं मिलता, जितना मिलना चाहिए।

T: Thought

सकारात्मक सोच के साथ सुबह की शुरुआत हो तो दिन अच्छा गुजरता है। हकीकत यह है कि हम जैसा सोचते हैं, वैसा ही बनने लगते हैं। हर समय इस सोच से काम करें कि अच्छे तरीके से कोई भी काम करेंगे तो उसका नतीजा भी अच्छा ही होगा। सुबह का पहला घंटा पूरे दिन की दिशा तय करता है।

दिन की शुरुआत करें ऐसे

सबसे पहले उठते ही बेड पर आराम से बैठें और आंख बंदकर एक मिनट तक गहरी सांस लें। इस दौरान अपने माता-पिता, टीचर, ईश्वर आदि को याद कर उनके प्रति आभार व्यक्त करें। उन्हें मन-ही-मन धन्यवाद दें। अगर हम तीन लिविंग गॉड अर्थात माता-पिता, शिक्षक और सूर्यदेव के प्रति आस्था, विश्वास, समर्पण और सम्मान रखें तो कामयाबी और खुशी, दोनों हासिल होंगी।

कंप्यूटर की तरह लाइफ

कंप्यूटर की प्रोग्रामिंग का बेसिक फंडा है: गार्बेज इन, गार्बेज आउट यानी कचरा अंदर डालेंगे तो कचरा ही बाहर आएगा। कहने का मतलब: जैसा अंदर डालेंगे, वैसा ही बाहर आएगा। कमोबेश यही सिद्धांत इंसान के दिमागी कंप्यूटर पर भी लागू होता है। बुद्धिमान और संयमित लोग ऐसे कचरे को अंदर आने से रोकने के लिए दिमाग के दरवाजे पर एक सशक्त स्कैनर लगा कर रखते हैं। इससे कचरा बाहर ही रुक जाता है।

रहें पॉजिटिव जोन में

इस पर गौर करना जरूरी है कि कौन-से विचार हैं जो हमारे दिमाग को बिना मतलब के उलझाते और परेशान करते रहते हैं। उनकी पहचान कर लेने के बाद उनसे मुक्ति के लिए जरूरी है कि दिनभर अच्छे कामों में व्यस्त रहें। बीच में अगर कोई नेगेटिव विचार या व्यक्ति आ जाए तो उससे जल्द छुटकारा पाकर पॉजिटिव जोन में लौटें। ऐसा मत सोचें कि यह नहीं हो पाएगा। नियमित अभ्यास से यह सब करना आसान होता जाएगा। रात में भी सोने से पहले सकारात्मक सोच-विचार में थोड़ा वक्त गुजारें, उसका चिंतन-मनन करें। कोई मोटिवेशनल किताब पढ़ना भी अच्छा रहेगा। चाहे किताबी ज्ञान की बात हो या प्रैक्टिकल की, अच्छे स्रोतों की संख्या जिंदगी में बढ़ते रहने से हर जगह प्रदर्शन बेहतर होता जाएगा।

B: Behaviour

हमें बचपन से यह बताया और सिखाया जाता है कि न सिर्फ अपने से बड़ों से बल्कि संसार में हर शख्स के साथ पूरी मानवीय संवेदना से पेश आना चाहिए। अपनी बात और बर्ताव से किसी को भी आहत करने की कोशिश न करें।

- खासकर बॉस प्रवृत्ति वाले लोगों को यह नहीं भूलना चाहिए कि सत्ता या पद आज है, क्या पता कल रहे या न रहे। लोगों के साथ आपके द्वारा की जाने वाली बदसलूकी की बदबू हमेशा आपके आसपास बनी रहेगी। यह उन्हें जिंदगीभर कमजोर करने के साथ-साथ परेशान भी करती रहेगी।
- किसी के साथ भी गलत या अमर्यादित व्यवहार करने से हम खुद सबसे पहले नेगेटिव एनर्जी से भर जाते हैं।
- किसी को नीचा दिखाना बड़े होने की पहचान नहीं है। यह आपके व्यक्तित्व में बड़ी कमी को दिखाता है। अमूमन खुद को सामने वाले की जगह पर रखकर देखेंगे तो आप इससे परहेज करेंगे।
- हर आदमी को स्वाभिमान प्यारा होता है। इंसान अपनी गरिमा और मर्यादा को कायम रखना चाहता है। हमें इसका सम्मान करना चाहिए।
- जैसा व्यवहार दूसरों से चाहते हैं, हमें वैसा ही व्यवहार उनसे करना चाहिए।
- नियमित रूप से खुद को तलाशें और तराशें।

Photos: Imagesbazaar

F: Food

फूड बेहद अहम होता है। आखिर जो कुछ भी हमारे मुंह से पेट तक जाएगा, उसका फायदा या नुकसान हमें ही उठाना पड़ेगा। उसका अवशेष भी हमारे शरीर से ही निकलेगा। अगर हम पौष्टिक आहार लेते हैं तो हमारे शरीर को प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फैट, विटामिन, मिनरल आदि पर्याप्त मात्रा में मिल जाते हैं जो हमें शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखने के लिए जरूरी हैं।

- कहा जाता है कि इंसान को जीने के लिए खाना चाहिए, न कि खाने के लिए जीना चाहिए।
- एक सामान्य इंसान को सुबह का नाश्ता सबसे पौष्टिक और ज्यादा मात्रा में लेना चाहिए। दोपहर का खाना नाश्ते की तुलना में हल्का और रात का खाना तो बिलकुल ही सादा और हल्का होना चाहिए।

ऐसी हो हमारी डाइट

- सुबह के नाश्ते में सबसे पहले एक चम्मच शहद लें। उसके बाद एक छोटी कटोरी भर अंकुरित चना, मूंग आदि के साथ थोड़ा-सा गुड़ और ड्राई फ्रूट्स लें और खूब चबाकर खाएं। नाश्ते में चना या जौ का सत्तू, चूड़ा-दही, रोटी-दाल/हरी सब्जी-सलाद, टोस्ट-ऑमलेट आदि भी ले सकते हैं।
- दोपहर के खाने में चावल या रोटी के साथ दाल, मौसमी हरी सब्जी, दही, सलाद का सेवन करें।
- रात के खाने को सादा और हल्का रखें और खाना जल्दी यानी रात के 8 बजे तक खा लें। सोने से पहले एक कप या एक गिलास गुनगुने दूध का सेवन करें।
- सबसे बड़ी बात, जब भी खाने बैठें, चिंतामुक्त रहें। जो भी खाएं, आराम से खूब चबाकर और स्वाद लेकर खाएं। खाते वक्त टीवी न देखें, मोबाइल पर बात न करें और न ही कुछ पढ़ें।

ये हैं डाइट के चंद खास टिप्स

- सुबह नींद से जगने के अधिकतम 2 घंटे के अंदर नाश्ता कर लेना अच्छा रहता है।
- नीबू, आंवला, लहसुन, अदरक, काली मिर्च, दालचीनी, लौंग, जीरा, अजवाइन, खीरा, टमाटर, मूली, गाजर, हरी पत्तेदार मौसमी सब्जियां, केला, पपीता, नारियल, मौसमी फल। इन चीजों को किसी न किसी रूप में हर दिन खाने की कोशिश करें, भले ही मात्रा कम ही क्यों न हो।
- खाने में फल और सब्जियां बेहद जरूरी हैं। पर्याप्त सब्जी और फल न खाने से हार्ट, किडनी, लिवर से जुड़ी बीमारियों के शिकार होने का अंदेशा रहता है।
- जिस इलाके में रहते हैं, वहीं पर उगने वाले फल और सब्जियां खाएं। आपको ताजा मिलेंगे और सस्ते भी। मौसमी फल-सब्जियां ही खाएं। कोल्ड स्टोरेज में रखे चीजें खाने पर कम पौष्टिकता मिलती है।

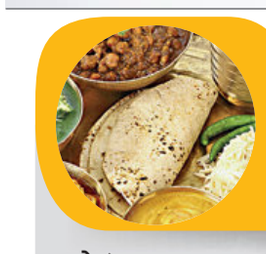

1. गेहूं

- नए गेहूं से बेहतर होता है पुराने गेहूं का आटा।
- आटे से चोकर को हम निकाल देते हैं। लेकिन चोकर यानी फाइबर को बाहर निकालना सेहत के लिए अच्छा नहीं होता। चोकर के साथ-साथ कई जरूरी पोषक तत्व आटे से निकल जाते हैं। मैदे का सेवन इसलिए अच्छा नहीं माना जाता।
- खाली गेहूं की रोटी खाने से बेहतर है कि मिक्स्ड ग्रेन की रोटी खाना। 5 किलो अनाज (गेहूं, ज्वार, बाजरा, रागी, मक्का, जौ) में 1 किलो दाल (चना, मटर) मिलाएं।

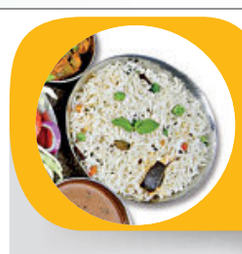

2. चावल

- सेहत के लिहाज से सफेद चावल सही नहीं है क्योंकि पॉलिश के दौरान आम चावल से विटामिन-बी सहित कई पोषक तत्व निकल जाते हैं। फाइबर भी घट जाता है।
- सेहत के लिए ब्राउन चावल या उसना या सेला चावल या बिना पॉलिश किया हुआ चावल लाभदायक होता है। इसमें प्राकृतिक रूप से फाइबर के साथ-साथ विटामिन-बी और मिनरल्स
- इसमें मैग्नीशियम, फॉस्फोरस, कैल्शियम, आयरन आदि मौजूद होते हैं।

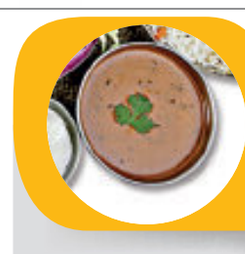

3. दाल

- दाल प्रोटीन का बहुत अच्छा और सस्ता स्रोत है।
- पॉलिश की हुई दालें देखने में अच्छी लगती हैं, लेकिन इससे बचना चाहिए।
- साबुत दाल यानी छिलकायुक्त दाल सेहत के लिए ज्यादा फायदेमंद है। हर दिन के खाने में शामिल करें।
- दालों में मौजूद पोषक तत्वों को हमारा शरीर अच्छे से एब्जॉर्ब कर लेता है। इसलिए इसका सेवन रोजाना करना चाहिए।
- अंकुरित दाल अपेक्षाकृत अधिक पौष्टिक होती है।

4. तेल

- पेड़-पौधों से हासिल तेल हेल्थ के लिए अच्छे होते हैं। यही कारण है कि भारत में सरसों, नारियल और मूंगफली के तेल का उपयोग सबसे ज्यादा होता है। तिल, जैतून और सूरजमुखी का तेल भी अच्छा है।
- रिफाइंड तेल के सेवन से बचें।
- तेल के उपयोग के मामले में इस बात का ध्यान जरूर रखें कि दो बार से ज्यादा तलने में इस्तेमाल किए गए तेल का प्रयोग न करें। इससे यूज्ड तेल की बर्बादी तो होगी, लेकिन आप हृदय रोग, एसिडिटी जैसी बीमारियों से बच जाएंगे।

5. फल और सब्जी

- मौसमी फल, हरी मौसमी सब्जी और साग (पालक, मेथी, चना, सरसों आदि) यानी वे फल, सब्जी या साग जो मौसम विशेष में बाजार में बहुतायत में उपलब्ध होती हैं, का सेवन हमारे शरीर के लिए सबसे लाभकारी होता है। बेमौसम की सब्जियां हों या फल, उनसे हमारे शरीर को अपेक्षित पोषण नहीं मिलता। फिर ये जेब पर भी भारी पड़ते हैं।
- एक्सपर्ट्स मानते हैं कि लोग जहां रहते हैं, वहां के स्थानीय फल और सब्जियों को ही ट्राई करें।

6. ड्राई फ्रूट्स

- ड्राई फ्रूट्स बेहतर पोषण देते हैं। बादाम, अखरोट, किशमिश, अंजीर, मूंगफली, पिस्ता, खजूर आदि को भी नियमित रूप से खाएं।
- मिक्स्ड ड्राई फ्रूट्स खाएं तो मात्रा 30 ग्राम से ज्यादा न हो। इसमें आप 7-8 बादाम, 7-8 काजू, 1-2 अखरोट, 10 किशमिश या 5 मुनक्के और कुछ दूसरे ड्राई फ्रूट्स जैसे खजूर, अंजीर आदि भी 1-2 मात्रा में मिला सकते हैं।
- मिक्स्ड ड्राई फ्रूट्स नाश्ते के रूप में लें और इन्हें खाने के करीब 1 घंटे बाद तक कुछ न खाएं।

शुगर से दूरी जरूरी

सुबह से रात तक हम सभी किसी-न-किसी रूप में चीनी का प्रयोग करते हैं। चाय, कॉफी, कोल्ड्रिंक्स, पैकेज्ड फ्रूट जूस, मीठे बिस्किट, केक, मिठाई आदि के बहाने हम दिन भर शुगर लेते रहते हैं। चीनी मिठास का आनंद लेने और शरीर में कार्बोहाइड्रेट की जरूरत को पूरा करने के लिए खाते हैं और यह कैलरी का बड़ा और आसान स्रोत है। लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि चीनी को मीठा जहर कहा जाता है।

- प्राकृतिक रूप से अन्न, फल, सब्जी आदि से भी हमारे शरीर को कार्बोहाइड्रेट मिल जाता है, इसलिए चीनी बहुत जरूरी नहीं है।
- एक अडल्ट को दिनभर में चीनी या मीठी चीजों से करीब 200 कैलरी मिले, यही काफी है।
- आपको ध्यान रखना चाहिए कि एक चम्मच चीनी में करीब 50 कैलरी होती है यानी दिनभर में औसतन चार चम्मच चीनी पर्याप्त है। हम एक कप चाय में एक चम्मच चीनी ले लेते हैं। अब आप देखिए कि दिन भर में कितने कप चाय पीते हैं। फिर हम अलग से भी मीठी चीजें खाते हैं।
- चीनी के अवगुण कई हैं। मसलन, चीनी एसिडिक गुण वाली होती है। इसलिए यह कई शारीरिक परेशानियों और बीमारियों मसलन, मोटापा, डायबीटीज, दांत और आंत की तकलीफ आदि का कारण बनती है।
- चीनी के बदले गुड़ का सेवन करें। गुड़ में बेशक चीनी की सफेदी और चमक नहीं होती, लेकिन कार्बोहाइड्रेट और मिठास के अलावा कई अच्छे तत्व प्राकृतिक रूप से मौजूद रहते हैं।
- गुड़ खाने के बाद हमारे शरीर में पाचन क्रिया के लिए जरूरी क्षार पैदा होता है जबकि चीनी एसिड पैदा करती है जो शरीर के लिए नुकसानदेह है।
- गुड़ में प्राकृतिक रूप से कैल्शियम रहता है जो हड्डियों को मजबूत करने में सहायक होता है।
- गुड़ में फॉस्फोरस भी होता है जो शरीर में कफ को संतुलित करने में भी मदद करता है।

नमक पर करें कंट्रोल

खाने में नमक न हो तो भोजन बेस्वाद लगता है। यह हमारे जीवन का एक अहम हिस्सा है। इसमें 40 प्रतिशत सोडियम और 60 प्रतिशत क्लोरीन होता है। सोडियम हमारे शरीर के लिए बेहद जरूरी है। नमक के अलावा सोडियम प्राकृतिक रूप से अनाज, सब्जियों, दूध, फल आदि चीजों में अलग-अलग मात्रा में मौजूद होता है। जो लोग संतुलित आहार लेते हैं उन्हें कई स्रोतों से सोडियम मिल जाता है।

- खाने में सेंधा नमक का इस्तेमाल करना बेहतर है। इसमें कई मिनरल प्राकृतिक रूप से मौजूद होते हैं।
- नमक का इस्तेमाल खाने की चीजों में प्रिजर्वेटिव के रूप में भी किया जाता रहा है। मक्खन, अचार और पैकेट में मिलनेवाली नमकीन चीजों में सोडियम की मात्रा ज्यादा होने का एक कारण यह भी है।
- इन दिनों नमक कई बीमारियों को बढ़ानेवाला साबित हो रहा है क्योंकि लोग नमक और नमकवाली चीजें कुछ ज्यादा ही खा रहे हैं। इससे हृदय रोग, हाइपरटेंशन, दमा, किडनी स्टोन जैसी कई घातक बीमारियों हो रही हैं।
- **कई बार डॉक्टर के कहने पर हम नमक तो खाना कम कर देते हैं, लेकिन मीठे बिस्किट, केक या डिब्बाबंद पेय का ज्यादा सेवन करने लगते हैं। इन सबमें भी बेकिंग सोडा या प्रिजर्वेटिव का इस्तेमाल होता है, जिसमें सोडियम मौजूद रहता है।**
- एक औसत भारतीय अडल्ट के रोज के खाने में अमूमन 8 ग्राम नमक होता है यानी करीब 3 ग्राम सोडियम और 5 ग्राम क्लोरीन, जबकि बेहतर सेहत के लिए 4-5 ग्राम नमक ही काफी है।
- जागरूकता से नमक का फालतू इस्तेमाल रोका जा सकता है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, ब्रिटेन में जागरूकता अभियानों की वजह से 2003 से 2011 के बीच नमक के इस्तेमाल में 15 फीसदी की कमी आई। इसका फायदा यह हुआ कि स्ट्रोक और हृदय रोगों के मामले 40% तक घट गए।

सांस लेना सीखें

ऑक्सिजन को प्राण वायु कहा जाता है। इसके कारण शरीर में मौजूद करोड़ों सेल एक्टिव रहते हैं। इन्हीं पर हमारा मेटाबॉलिजम निर्भर करता है।

- गहरी या लंबी सांस लेने से ऑक्सिजन का समुचित उपयोग कर हमारा शरीर लंबी उम्र तक स्वस्थ रह सकता है।
- प्राणायाम की विभिन्न विधियों से आप सही तरीके से सांस लेना सीख सकते हैं।
- बेहतर सेहत के लिए जरूरी है कि सारा दिन घर के अंदर ही घुसे न रहें। सुबह कम से कम आधा घंटा पार्क में अपना वक्त जरूर गुजारें।

सांस लेने का सही तरीका

सही तरीके से सांस ले रहे हैं या नहीं, इसे पहचाने का आसान तरीका है। अभी आप सांस भरें और देखें कि आपका पेट अंदर जा रहा है या बाहर। कमर सीधी करके बैठें। फिर पेट पर हाथ रखें। सांस लेने और निकालने के साथ पेट भी बाहर और अंदर जाएगा। लेटकर चेक करना चाहते हैं तो पेट पर कोई किताब रख लें। किताब के ऊपर-नीचे जाने से सांस का अंदाजा लगा सकते हैं।

अगर सांस भरते वक्त पेट बाहर जाए तो आप ठीक तरीके से सांस ले रहे हैं। अगर पेट अंदर जाए तो गलत। इसी तरह सांस निकालते हुए पेट अंदर की तरफ जाना चाहिए। दरअसल, जब सांस लेते हैं तो लंग्स फैलते हैं, बिल्कुल वैसे ही जैसे कि हवा भरे जाने पर बैलून फैलता है। सांस बाहर निकालते हैं तो लंग्स सिकुड़ते हैं, वैसे ही जैसे हवा निकलने पर बैलून सिकुड़ जाता है। वैसे, जब तक सांस लेने का सही तरीका मालूम न हो या फिर इसपर गौर न करें तो ज्यादातर लोगों का पेट सांस लेते हुए अंदर आता है और छोड़ते हुए बाहर। ऐसा तनाव की वजह से होता है। ऐसे में चेस्ट टाइट होती है और डायफ्राम कड़क होकर ऊपर हो जाता है। इससे पेट बाहर को जाता है। यह गलत तरीका है। इससे लंग्स और हार्ट पर दबाव पड़ता है।

हेल्दी तन-मन के मंत्र

अगर सही से जिंदगी मैनेज करें तो हेल्दी रहना बहुत मुश्किल नहीं है। खानपान में संतुलन रखें और सोच व बर्ताव को बेहतर बनाएं। अच्छी हेल्थ के लिए खुद को किन चीजों से जोड़ें और किन्हें माइनस करें, पूरी जानकारी दे रहे हैं जाने-माने मोटिवेशनल स्पीकर और वेलनेस कंसल्टेंट मिलन सिन्हा

पानी: कब, कितना

हमारे शरीर में करीब 60 फीसदी पानी है। शरीर में पानी की कमी हो जाए तो कई तरह की स्वास्थ्य समस्याएं पैदा होने लगती हैं। लिहाजा हमें हमेशा पर्याप्त मात्रा में पानी पीना चाहिए। वैसे पर्याप्त पानी पीना ही नहीं, सही तरीके से पानी पीना भी जरूरी है।

- ज्यादातर लोग पानी पीते नहीं, गटकते हैं जैसे कि उन्हें पानी पीने तक की फुर्सत नहीं है।
- **सही तरीका है:** धीरे-धीरे पानी पीना और वह भी बैठकर आराम से। खड़े-खड़े बोतल से मुंह में पानी उड़ेलना और उसे फटाफट गटकना सही नहीं है।
- हमें रोजाना 2-3 लीटर पानी पीना चाहिए। इतना ही नहीं, हम कब-कब और कितना पानी पीते हैं, इसका भी हमारी सेहत से गहरा ताल्लुक है।
- रोज सुबह नींद खुलने के बाद कम से कम 1 गिलास गुनगुना पानी पीना चाहिए। ज्यादा फायदे के लिए गुनगुने पानी में आधा नीबू निचोड़ लें।
- खाने के फौरन पहले, खाने के बीच में और खाने के फौरन बाद पानी नहीं पीना चाहिए क्योंकि इससे पाचन क्रिया प्रभावित होती है। बेहतर पाचन के लिए खाना खाने के कम-से-कम 30 मिनट पहले और खाना खाने के 45 मिनट बाद पानी पीने की सलाह दी जाती है।
- सेहत के लिहाज से गिलास में मुंह लगाकर आराम से चाय या कॉफी की तरह सिप करते हुए पानी पीना और यह महसूस करना कि इससे हमारा शरीर हाइड्रेटेड हो रहा है, सबसे अच्छा माना गया है।
- शरीर जितना हाइड्रेटेड रहेगा, हम उतना ही स्वस्थ रहेंगे। खासकर रात में सोने से पहले थोड़ा पानी जरूर पीना चाहिए, इससे हार्ट प्रॉब्लम और ब्रेन स्ट्रोक की आशंका कम हो जाती है। सच तो यह है कि पानी के माध्यम से ही हमारे शरीर से हानिकारक पदार्थ बाहर निकलता है। ऐसे में कम पानी शरीर के लिए परेशानी ही बढ़ाता है।
- आप खुद भी महसूस कर सकते हैं कि मानसिक तनाव हो तो पानी के दो-चार घूंट भी सुकून का अहसास करवाते हैं।
- दूसरों को 'पानी पिलाने' के मुहावरे को सही साबित करने के बजाय खुद पानी पीने की कला में पारंगत होना हर दृष्टि से बेहतर हेल्थ की गारंटी है। जब तक खुद पानी पीने का सही तरीका नहीं अपनाएंगे, समस्याएं बनी रहेंगी।

म्यूजिक बहलाए मन

आज हर आम आदमी की जिंदगी में शोर, अनिश्चितता और कंफ्यूजन बढ़ रहा है। कारण एक नहीं, कई हैं: जाने, पहचाने और अनजाने भी। मनुष्य आम बुनियादी समस्याओं के बीच शांति और सुकून को तलाशता रहता है।

- जीवन में शांति, सुकून और संगीत का बेहद करीबी रिश्ता रहा है। मानसिक तनाव की वजह से परेशान रहने वाले लोगों के लिए तो म्यूजिक किसी दवा से कम नहीं।
- म्यूजिक हमारी पर्सनैलिटी को निखारता है और हमें शारीरिक और मानसिक रूप में फिट रखने में अहम भूमिका अदा करता है।

हर मर्ज की दवा है नींद!

दिनभर की सक्रियता, व्यस्तता और भागदौड़ के बाद हम रात में सोना चाहें, लेकिन नींद न आए तो इससे बड़ी परेशानी क्या हो सकती है! तमाम रिसर्च और सर्वे बताते हैं कि नींद संबंधी समस्याओं से ग्रस्त तमाम लोग शराब या नींद की गोली का सेवन करते हैं। लेकिन यह सेहत के लिए सही नहीं है।

- नींद स्वस्थ रहने के लिए सबसे जरूरी चीज है।
- नींद के दौरान हमारे शरीर रूपी जटिल, लेकिन अद्भुत मशीन की सफाई और रिपेयरिंग होती रहती है। तभी तो दिनभर की थकान के बाद रात की अच्छी नींद से थकान दूर हो जाती है।
- अच्छी नींद न मिलने के कारण स्ट्रेस हॉर्मोन्स काफी बढ़ जाते हैं, जिस कारण शरीर कई बीमारियों की चपेट में आ जाता है। इसलिए रात में 7-8 घंटे जरूर सोएं। रात की अच्छी नींद सुबह आपके लिए ताजगी, उमंग व उत्साह का उपहार लेकर आती है।
- मोबाइल नींद के मामले में विलन है। इसलिए सोने से घंटे भर पहले अपना मोबाइल बंद कर लें या फिर साइलेंट मोड पर डाल दें।
- बेहतर तो यह है कि मोबाइल को सोने के स्थान से कुछ दूर रखें।
- आवाज और रोशनी अच्छी नींद में खलल डालती है। सोने से पहले इसका ध्यान रखें तो बेहतर रहेगा।

खुशी के खास सूत्र

- योग करते हैं तो लाइफ में प्लस ही प्लस है, वरना वियोग यानी माइनस ही माइनस।
- जीवन में संतुलन जरूरी है। बुद्ध के बताए मध्य मार्ग पर चलना सबसे बढ़िया।
- यह मानकर जीवन पथ पर आगे बढ़ने की लगातार कोशिश करें कि अगर कहीं या कभी इस यात्रा में समस्या या परेशानी आई तो उसके साथ समाधान भी होगा।
- वर्तमान में जीना सीखें। सच्चे दिल और खुले दिमाग से अपने अतीत के अनुभवों से सीख लेकर वर्तमान का सम्मान करने वाला काम तो मजे में करता ही है, भविष्य भी शानदार बनाता है। इस तरह की सोच और आदत डालें।
- दुनिया में शायद ही कोई ऐसा शख्स होगा, जिसके जीवन में सिर्फ मजा ही मजा हो, कोई सजा, गम या समस्या न हो।
- जिसे हम कंट्रोल कर सकते हैं उस पर फोकस करें। जिसे कंट्रोल करना असंभव हो या जिसे कंट्रोल करना जरूरी न हो, उस पर फोकस न करें।
- छोटी-मोटी शारीरिक दिक्कतों को घरेलू उपायों से ठीक करने का प्रयास करें। अगर ठीक न हो तो बिना समय नष्ट किए डॉक्टर से संपर्क करें। डॉक्टर जो सलाह दें, उसमें अपनी ओर से कोई बदलाव न करें।
- कोशिश करें कि जहां तक पैदल जा सकते हैं, वहां तक पैदल ही जाएं।
- दूसरे की बातों से ज्यादा परेशान और खुश होने की बजाय अपनी समीक्षा खुद ही करें। आज के लिए जितनी प्राथमिकताएं तय की थी, उन्हें पूरा किया है या नहीं। अगर कमी रही है तो सुधार की जरूरत कहां है, यह भी देखें।
- अच्छी बातें सबसे सीखें, उन्हें जीवन में भी उतारें। लेकिन किसी का पिछलग्गू न बनें। जिंदगी अपने तरीके से जिएं। इससे तानव कम होगा, सफलता और खुशी ज्यादा मिलेगी।

तीरंदाज

■ अश्विनी भटनागर

मर्यादा की हदें दोनों तरफ

कुछ समय की शांति के बाद '# मीटू' ने पलटवार कर दिया है और ट्विटरवासी फिर से उद्वेलित हो उठे हैं। लगभग दो साल पहले एक महिला ने अपने यौन उत्पीड़न को लेकर ट्विटर पर अपनी आपबीती साझा की थी और उसके बाद उत्पीड़न की शिकायतों की बाढ़ सोशल मीडिया पर आ गई थी। कई दर्जन महिलाओं ने बड़ी हिम्मतऔर बेबाकी से दुनिया को बताया था कि किस तरह नामी-गिरामी पुरुषों ने अपने पद और वरीयता की धौंस के बल पर उनके साथ आपत्तिजनक आचरण किया था और किस तरह से इन उत्पीड़ित महिलाओं ने उस व्यथा को सहा था।

उस समय पुरुष प्रधान व्यस्था में सार्वजनिक रूप से एतराज करने की हिम्मत नहीं हुई थी, पर जब एक आवाज बुलंद हुई, तो सभी को लगा था कि चुप बैठना ऐसी भीषण स्थिति में विकल्प नहीं हो सकता है। इसके खिलाफ आवाज उठाने में ही सर्वहित है। पीड़ित महिलाओं के ट्विटर और अन्य माध्यमों पर बताई गई आपबीती की वजह से लगभग हर व्यवसाय से जुड़े प्रभावशाली पुरुष सरेआम लज्जित ही नहीं हुए थे, बल्कि कई तो कोर्ट कचहरी की चपेट में भी आ गए थे। कुछ नामचीन पुरुषों ने शिकायत कर्ताओं को दबाने के लिए उन पर मानहानि का मुकदमा भी दायर कर रखा है।

वैसे, यौन उत्पीड़न और उससे थोड़ा आगे यौन शोषण हमारे समाज का बड़ा सच है। यह अभी तक एक झीने से परदे की ओट में था- इसे सब देख रहे थे, पहचान रहे थे, हो सकता है उसके बारे में 'गॉसिप' करके भोंडे मजाक भी बनाते थे, पर उसको नजरअंदाज कर रहे थे। हमारा व्यवहार चिरपरिचित पितृसत्तात्मक सामाजिक तंत्र के अनुसार था। कोई शर्मिंदा नहीं था और न ही कोई स्थिति में सुधार लाने के लिए कुछ करना चाहता था। वैसे इस विषम स्थिति के दोषी सिर्फ पुरुष नहीं थे, पर महिलाओं का एक वर्ग भी था, जो अपनी सहेलियों/ बहनों का साथ देने के बजाय उत्पीड़न की व्यवस्था में अपनी सक्रिय हिस्सेदारी निभा रहा था।

कुल मिला कर उत्पीड़न की स्थिति भयावह थी और जब कुछ जांबाज महिलाओं ने अपनी व्यथा साझा की, तो पहले हम हतप्रभ रह गए थे और फिर लगातार दबाव के चलते शोषण कर्ताओं पर गाज गिरने लगी थी। ऐसा लगा था कि पितृसत्तात्मक व्यस्था को बड़ा धक्का लग गया है और सम्यक और न्याय संगत दौर बस अब शुरू होने ही वाला है।

पिछले दिनों ऐसी उम्मीद पर पानी फिरता एक बार फिर लगने लगा जबकि कथित उत्पीड़नकर्ता ने सोशल मीडिया पर शोषित महिला के साथ हुई अपनी बातचीत को सार्वजनिक कर दिया था।

> जरूरी है कि आचरण की शर्तें दोनों पक्षों पर एक तरह से ही लागू हों। यह सर्वविदित है कि पुरुष प्रवृत्ति आखेट की है। इस प्रवृत्ति को पूर्णतया समाप्त तो फिलहाल नहीं किया जा सकता है, पर क्रमबद्ध तरीके से उस पर अंकुश लगा कर समाप्ति की ओर जरूर हांका जा सकता है।

इन संदेशों को पढ़ कर एक बार तो सारे '# मीटू' आंदोलन पर शक होने लगा था। उनके द्वारा जारी किए गए मैसेज बेहद ही आत्मीय थे। वे बेहद कामुक भी थे। समझ में नहीं आ रहा था कि जब एक स्त्री और एक पुरुष एक-दूसरे को अच्छी तरह से जानते भी नहीं हैं, तो उन्हें इस प्रकार की बातचीत में उलझने की जरूरत क्या थी। मैसेज के पूरे क्रम में महिला पूरी उत्तेजना से अपनी कामुक भावनाओं का प्रसार कर रही थी। पुरुष उसका अपने हिसाब से उपयोग कर रहा था।

कौन सही है या कौन गलत, या फिर कब और कैसे इन दोनों में मतभेद हुआ या प्रेमालाप यौन प्रताड़ना की हद तक कब पहुंच गया, कहना कठिन है। सारे तथ्य अभी हमारे सामने नहीं हैं और शायद कभी सामने आएंगे भी नहीं। पर इस प्रकरण से एक अति महत्त्वपूर्ण सवाल उठा है- खुले डीएम (डायरेक्ट मैसेज) पर बंद कमरों वाली बातें क्यों हो रही थीं? दो लगभग अनजान व्यक्ति अपनी कामुक अभिव्यक्ति को वायरल मीडिया पर बेलगाम क्यों कर रहे थे? वैसे आज की तारीख में मर्यादा की बात करना पुराणपंथी लगता है, पर इस अति-आधुनिक युग में भी क्या भावनात्मक और कामुक आचरण की सीमाएं निर्धारित नहीं होनी चाहिए? शायद यह बात आज के संदर्भ में बेतुकी लगें, पर अगर एक पर कामुक भावावेश शुरू हो जाता है, तो कौन किस हद तक बह जाएगा, इसका पूर्वनिर्धारण क्या संभव है? हां, कंसेंट (सहमति) होना आवश्यक है, पर भावावेश की तरलता पर पत्थर की लकीर कैसे खींची जाएगी? और वह भी ऐसी लकीर, जो सिर्फ एक पक्ष की क्षणिक मर्जी के अनुसार हो? दूसरे शब्दों में, क्या कामावेश से ग्रसित पुरुष अपने को तुरंत सात्विक पुरुष के अवतार में तब्दील कर सकता है? अपेक्षा कुछ ऐसी ही की जा रही है कि मर्द अभी की हां है और अभी की ना जैसी दोनों क्षणभंगुर स्थितियों में अपना संतुलन बनाए रखे। पर क्या ऐसा संतुलन आम व्यक्ति के वश में है?

वैसे क्योंकि यहां मामला आचरण का है, इसलिए यह जरूरी है कि आचरण की शर्तें दोनों पक्षों पर एक तरह से ही लागू हों। यह सर्वविदित है कि पुरुष प्रवृत्ति आखेट की है। इस प्रवृत्ति को पूर्णतया समाप्त तो फिलहाल नहीं किया जा सकता है, पर क्रमबद्ध तरीके से उस पर अंकुश लगा कर समाप्ति की ओर जरूर हांका जा सकता है। '# मी टू' जैसे आंदोलन एक साहसिक कदम हैं, जो इस प्रक्रिया को दिशा देते हैं। उनको किसी भी दशा में पथ भ्रष्ट नहीं होना चाहिए।

पर साथ ही फोन और लैपटॉप पर खुली खिड़कियों के बारे में भी हमें सोचना होगा। ताक-झांक से अगर हमें बचना है या फिर जबरन प्रवेश को हमें रोकना है, तो ऐसा करना होगा कि अगर ये खिड़कियां बंद नहीं हो सकती हैं, तो इन पर निश्चित मर्यादा का पर्दा जरूर पड़ा होना चाहिए। इस संदर्भ में महिलाओं को, '# मीटू' की तरह, एक और पहल करनी होगी और कड़े फैसले करने होंगे। हद तक जाने की आवश्यकता और फिर उस हद से कदम पीछे खींच लेने की जरूरत पर गंभीरता से विचार करना होगा।

मंदी को रोकेगी खेती

निरंकार सिंह

वैश्विक अर्थव्यवस्था की सुस्ती का मुकाबला करने के लिए उद्यमियों ने कृषि क्षेत्र में निवेश बढ़ाने के साथ-साथ इसको आधुनिक बनाने पर जोर दिया। सिंचाई पर भी ध्यान देने की बात कही गई है। इसमें कोई संदेह नहीं कि कृषि आज भी हमारी अर्थव्यवस्था का मूलाधार है। देश के किसान उसकी आबादी का सबसे बड़ा हिस्सा हैं। इसलिए देश के राजनीतिक और इसके आर्थिक विकास के लिए कृषि की स्थिति हमेशा महत्त्वपूर्ण रही है। यह आधुनिकीकरण के दौरान भी महत्त्वपूर्ण रहेगी। यह सवा अरब लोगों का पेट भरती है। हल्के उद्योग के लिए कच्चे माल की जरूरतों की सत्तर फीसद आपूर्ति, औद्योगिक उत्पादों के लिए बाजार प्रदान और निर्माण के लिए धन जमा करती है। पिछले तीस सालों के दौरान बार-बार देखा गया है कि कृषि उत्पादन राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास पर काफी हद तक असर डालता और निर्माण के पैमाने और गति को प्रत्यक्ष रूप से निर्धारित करता है। जब भी फसल खराब हुई है, तो उसके तत्काल बाद हल्के और भारी औद्योगिक उत्पादन में भारी कमी आई है। उसके बाद जब कृषि की हालत सुधरी, तो औद्योगिक उत्पादन दुबारा बढ़ना शुरू हो गया।

अगर हम कृषि के विकास और आधुनिकीकरण के लिए बड़े पैमाने पर कोशिश नहीं करते हैं, तो समूची अर्थव्यवस्था के आधुनिकीकरण को भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है और यह नाकाम भी हो सकता है। कृषि के विकास को प्राथमिकता देने का मतलब है कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सबसे पहले खेती-बारी को प्रमुखता देनी चाहिए और फिर हल्के उद्योग तथा उसके बाद भारी उद्योग पर जोर देना चाहिए। पर आज हमारी खेती पूरी तरह मानसून पर निर्भर है। इसलिए कभी सूखे का तो कभी बाढ़ का संकट पैदा हो जाता है। उधर किसान कभी खाद, तो कभी डीजल के संकट से जूझता रहता है। इसलिए खेती में निवेश बढ़ाने की जरूरत है। इसके साथ-साथ सिंचाई सुविधा भी बढ़ाई जानी चाहिए। हमारा देश आज और आगे भी गेहूं और चावल का प्रमुख उत्पादक और उपभोक्ता बना रहेगा। इसलिए उनके उत्पादन को बढ़ाने के लिए कदम उठाने पड़ेंगे। गेहूं की पैदावार के क्षेत्र को और अधिक व्यापक बनाने के उद्देश्य से पूर्वी उत्तर प्रदेश, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और पूर्व के राज्यों में अधिक मात्रा में गेहूं की पैदावार करनी होगी। संकर चावल की विधि को अपना कर, पारंपरिक क्षेत्रों में चावल का उत्पादन और अधिक बढ़ाना होगा।

मध्य भारत में मोटे अनाज के उत्पादन में वृद्धि करके अन्य उत्पादों की पैदावार को भी बढ़ाना होगा, ताकि वे आंशिक रूप से गेहूं और चावल की जरूरत को कम कर सकें। अनाज की प्रौद्योगिकी को अधिक विकसित करके इस क्षेत्र को इतना अधिक महत्त्वपूर्ण बनाना होगा, ताकि वह लगातार तेजी से बढ़ती हुई मांग के अलावा, निर्यात योग्य मोटा अनाज भी उत्पादित कर सके। मध्य भारत को सब्जियों और फलों का उत्पादन केंद्र बनाया जाए और यह कोशिश भी की जाए कि ये कम कीमत पर लोगों को उपलब्ध हो सकें। इससे गेहूं और चावल की खपत पर भी असर पड़ेगा और ऐसा ही प्रयास, जाड़े के दिनों में बड़े पैमाने पर हिंद-गंगा क्षेत्र में किया जाना चाहिए। आलू टैपियोका (कसावा) और शकरकंदी जैसी गांठदार फसलों को और ज्यादा उगाया जाए और उन्हें कम कीमत मुहैया कराई जाए। इस बात पर ज्यादा जोर देने की जरूरत है।

देश में दालों की कमी है, मगर प्रोटीन की नहीं। अगर हर व्यक्ति पचास ग्राम का औसत भी रखा जाए तो सवा अरब आबादी वाले देश के लोगों को दो सौ बीस लाख टन प्रोटीन की जरूरत होगी। एक सौ दस लाख टन उच्च कोटि की जरूरत दूध, अंडों, मछलियों और मांस आदि से पूरी कर देंगे और ढाई सौ लाख टन अनाजों, दालों, तिलहन, फलों, सब्जियों और अन्य स्रोतों से पूरी हो सकेगी। लेकिन लोगों की खाने की आदतों को ध्यान में रखते हुए, दालों की मांग को उच्च वरीयता देकर पूरा करना पड़ेगा। चूंकि सब्जियों और फलों की खपत भविष्य में बढ़ेगी, इसलिए हर क्षेत्र में कृषि के उपयुक्त जलवायु की आवश्यकताओं और आर्थिक दृष्टि से उचित लाभ को ध्यान में रखते हुए सही विकल्प का चुनाव करना पड़ेगा। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए कोल्ड स्टोरेज और दूर-दूर तक फासला तय करने वाले परिवहन की व्यवस्था भी महत्त्वपूर्ण होगी।

देश के ग्रामीण परिवार, खासकर भूमिहीन और छोटे तथा सीमांत किसान पशुपालन को आय के पूरक स्रोत के रूप में अपनाते हैं। इस व्यवसाय में अर्द्धशहरी, पर्वतीय, जनजातीय और सूखे की आशंका वाले क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को सहायक रोजगार मिलता है, जहां केवल फसल की उपज से ही परिवार का गुजर-बसर नहीं हो सकता। केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (सीएसओ) के अनुमान के अनुसार चालू मूल्य पर मछली और पशुपालन क्षेत्र का कुल योगदान वर्ष 2008-09 के दौरान तीन लाख दस हजार आठ सौ इक्यानबे करोड़ रुपए था। उस वर्ष सकल घरेलू उत्पाद में इन क्षेत्रों का योगदान 4.1 प्रतिशत था। विश्व में सबसे अधिक मवेशी भारत में हैं। दुनिया की कुल भैंसों का सत्तावन प्रतिशत और गाय-बैलों का चौदह प्रतिशत भारत में है।

पशुपालन और डेयरी विभाग द्वारा 16 अक्तूबर, 2019 को पशुधन जनगणना की जारी गई रिपोर्ट के अनुसार भारत की पशुधन आबादी 2012 की तुलना में 4.6 प्रतिशत बढ़ कर तिरपन करोड़ सत्तावन लाख अस्सी हजार हो गई है। भारत में बीते पांच सालों में गायों की संख्या अठारह प्रतिशत बढ़ कर 14.51 करोड़ हो गई है। रिपोर्ट के अनुसार देश में भैंसों की संख्या इस दौरान मात्र एक प्रतिशत बढ़ी है। नवीनतम गणना के मुताबिक बकरियों की संख्या दस फीसद बढ़ कर 14.9 करोड़ हो गई है। सुअर की संख्या बारह फीसद घट कर 90.6 लाख है। रिपोर्ट के अनुसार देश में 2019 में गधों की संख्या इकसठ प्रतिशत घट कर एक लाख बीस हजार रह गई, जबकि ऊंटों की संख्या सैंतीस प्रतिशत घट कर ढाई लाख रह गई है। 2019 में कुक्कुट की संख्या करीब सत्रह प्रतिशत बढ़ कर पचासी करोड़ अठारह लाख दस हजार हो गई है। पिछली गणना की तुलना में इस साल स्वदेशी मादा मवेशियों की संख्या में दस फीसद की वृद्धि हुई है। देश में फिलहाल कुल घोड़े और टट्टू 3.4 लाख हैं, जो पिछली गणना के मुकाबले 45.6 फीसद कम हैं।

देश की लगातार बढ़ती आबादी की (पशुओं से प्राप्त होने वाली) प्रोटीन की आवश्यकताएं पूरा करने में दूध, अंडा और मांस के रूप में खाद्य भंडार में पशुपालन क्षेत्र जबर्दस्त योगदान कर रहा है। देश में फिलहाल प्रोटीन की प्रति व्यक्ति दैनिक उपलब्धता लगभग 11.3 ग्राम है, जबकि इसका विश्व औसत 29 ग्राम है। पर बढ़ती जनसंख्या को देखते हुए बढ़ते बच्चों और शिशुओं को दूध पिलाने वाली माताओं के पोषण-स्तर को बनाए रखने के लिए देश में प्रोटीन की उपलब्धता में कम से कम दोगुनी बढ़ोतरी होनी चाहिए। राष्ट्र के पुनरुद्धार के लिए सिर्फ राजनीतिक स्वतंत्रता पर निर्भर रहना काफी नहीं है। हमें अपनी पूरी सहमति के साथ अर्थव्यवस्था का विकास करना चाहिए। अपने कृषि, पशुपालन उद्योग और राष्ट्रीय प्रतिरक्षा को आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी से लैस करना चाहिए।

मुद्दा

> पिछले तीस सालों के दौरान बार-बार देखा गया है कि कृषि उत्पादन राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास पर काफी हद तक असर डालता और निर्माण के पैमाने और गति को प्रत्यक्ष रूप से निर्धारित करता है। जब भी फसल खराब हुई है, तो उसके तत्काल बाद हल्के और भारी औद्योगिक उत्पादन में भारी कमी आई है।

यह दाग बहुत गहरा है

वक़्त की नब्ज़

■ तवलीन सिंह

जिस दिन देवेंद्र फडणवीस ने दूसरी बार मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दिया, मुझे किसी ने एक मीम भेजा, जो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हुआ है। इसमें फडणवीस को विसर्जन के लिए उठा कर ले जा रहे हैं अजित पवार और उद्धव ठाकरे और ऊपर मराठी में लिखा है 'डेढ़ दिन के गणपति'। किसी राजनेता का जब मजाक शुरू होने लगता है, तो उसकी छवि को अक्सर गहरी चोट पहुंचती है। भारतीय जनता पार्टी की समस्या यह है कि चोट का असर प्रधानमंत्री तक गया है। बड़े से बड़े राजनीतिक पंडित समझ नहीं पा रहे हैं कि नरेंद्र मोदी ने इस खेल में भाग लेने का फैसला क्यों किया। रात के अंधेरे में राष्ट्रपति शासन उठाने की पहल क्यों की। क्या उनको इतना भी नहीं बताया गया था कि अजित पवार पर भरोसा बिना शरद पवार से सलाह-मशविरा किए करना बेवकूफी थी?

विश्लेषण अगर इस पूरे हादसे का किया जाए तो यह कहना गलत न होगा कि सबसे ज्यादा नुकसान नरेंद्र मोदी का व्यक्तिगत तौर पर हुआ है। उन्होंने पांच साल 'मन की बात' कार्यक्रम द्वारा अपनी छवि एक ईमानदार, सच्चे राजनेता की बनाई है। एक ऐसे राजनेता की, जिसकी सार्वजनिक जीवन में भूमिका सिर्फ इतनी है कि वह देश की राजनीति से हमेशा के लिए भ्रष्टाचार को समाप्त करना चाहते हैं और भारत को संपन्नता और समृद्धि की ऊंचाइयों तक लेकर जाना चाहते हैं। इस प्रयास में उन्होंने अपने पहले कार्यकाल में आम ग्रामीण भारतीय को वे बुनियादी चीजें दिलवाई हैं, जिनका उनके जीवन में सख्त अभाव था- बिजली, शौचालय, घरेलू गैस, आवास आदि। इक्कीसवीं सदी की ये बुनियादी जरूरतें हैं।

तो कैसे हाथ मिलाया उन्होंने एक ऐसे राजनेता से, जिस पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगे हुए हैं? कैसे इसको उप-मुख्यमंत्री की शपथ दिलवाई चोरी-चुपके दिन चढ़ने से पहले? माना कि इस तरह की हरकतें होती आई हैं अपने भारत महान में। माना कि चुनावों के बाद जब भी स्पष्ट बहुमत नहीं मिला है किसी को, तो विधायकों को पांच सितारा होटलों में कैद रखने की प्रथा पुरानी है। माना कि सौदेबाजी फौरन शुरू हो जाती है और विधायकों की कीमत तय होती है। गलत चीजें हैं ये, इसलिए कि जनता के साथ धोखा है और जनादेश का मजाक। मोदी जब पहली बार प्रधानमंत्री बने थे, तो मेरे जैसे लोगों को पूरा विश्वास था कि भ्रष्टाचार हटाने के साथ वे इस गंदी राजनीतिक सभ्यता को भी समाप्त करने की पूरी कोशिश करेंगे। सो, बहुत बुरा लगा जब वे खुद महाराष्ट्र के इस बेहूदा तमाशे में भाग लेने लगे।

उनकी चमकती छवि पर जो अब दाग लग गया है, उसको हटाना उनका पहला काम होना चाहिए। जैसे-तैसे सरकार बनी है अब महाराष्ट्र में, उसके काम में अगर केंद्र सरकार बाधाएं डालती है, तो नुकसान होगा उनका व्यक्तिगत तौर पर। और महाराष्ट्र का बहुत ज्यादा। हालात खराब हैं यहां के कई ग्रामीण क्षेत्रों में। सो, उद्धव ठाकरे को प्रधानमंत्री ने मुख्यमंत्री की शपथ लेने के बाद जो बधाई दी, अच्छा किया। अब अगर चलती है सरकर या गिरती है, तो अपने बल पर होना चाहिए।

देवेंद्र फडणवीस को भी आदेश दिया जाना चाहिए कि नेता विपक्ष की भूमिका वे ईमानदारी से निभाने की कोशिश करें। उनका जिक्र आया है, तो यह भी कह देना जरूरी समझती हूं कि यह सारा तमाशा शायद नहीं होता अगर उन्होंने थोड़ी-सी विनम्रता दिखाई होती चुनाव अभियान के दौरान और परिणाम आने के बाद भी। जो उन्होंने बार-बार कहा कि मुख्यमंत्री सिर्फ वह बनेंगे और कोई नहीं, उसमें एक घमंड दिखा और अहंकार भी। ऐसा लगा शिव सेना के आला नेताओं को कि उनको चुनौती दी जा रही है। इस तरह की चुनौतियों का जवाब अक्सर देने वाले का नुकसान ज्यादा करता है। अब जैसी-तैसी सरकर बनी है महाराष्ट्र में, उसको काम करके दिखाने की जिम्मेदारी सिर्फ उसकी होनी चाहिए। केंद्र सरकार को दूर रहना चाहिए।

> उनकी चमकती छवि पर जो अब दाग लग गया है, उसको हटाना उनका पहला काम होना चाहिए। जैसे-तैसे सरकार बनी है अब महाराष्ट्र में, उसके काम में अगर केंद्र सरकार बाधाएं डालती है, तो नुकसान होगा उनका व्यक्तिगत तौर पर। और महाराष्ट्र का बहुत ज्यादा।

विचारधारा का अंत

बाखबर

■ सुधीश पचौरी

सोनिया ने सेक्युलरिज्म समर्पित किया! शिवसेना ने गोडसे और सावरकर को समर्पित किया! भाजपा ने अजित पवार के नौ मामले समर्पित किए! सब सत्ता की खातिर, क्योंकि सत्ता सबसे बड़ी सेक्युलर है!

पूरे सप्ताह एक से एक जादुई खबरें! मीडिया पल-पल बर्बाद! अगले पल क्या होगा?किसी को नहीं मालूम! सब चकित! कोई दिल्ली, कोई मुंबई, कोई शरद पवार के घर, तो कोई मातोश्री में!

कच्ची-पक्की हजार बाइटें! हजारों गप्पें! कौन सच? कौन झूठ? कौन अर्धसत्य? कौन पूर्ण असत्य? कौन किसे चूना लगा रहा है और कौन है, जो प्रेमपूर्वक लगवाए जा रहा है? किसी को नहीं मालूम!

सीन 'हाइपर-रीयल' थे : इधर शरद पवार सोनिया से मिलने वाले हैं, कि उधर अहमद पटेल शरद से मिल रहे हैं और उद्धव ठाकरे से मिल कर 'न्यूनतम साझा कार्यक्रम' बना रहे हैं, कि एंकर पूछते फिर रहे हैं कि क्या सोनिया और सेना के बीच शरद पवार समझौता करा सकते हैं?

इधर भाजपा प्रवक्ता कहते कि सेना-एनसीपी-कांग्रेस का गठबंधन 'अपवित्र' है। जनादेश का अपमान है! हमारे पास बहुमत है। उधर सेना वाले दावा करते कि सीएम शिवसेना का ही बनेगा। जल्द सेना-एनसीपी-कांग्रेस की 'महा अघाड़ी' सरकार शपथ लेगी और उद्धव सीएम बनेंगे!

इसी रस्साकशी में शरद ने पहला झटका दिया। अजित को एनसीपी के नेता पद से हटाया और भाजपा का खेल खत्म कर दिया। एंकर कहते रहे कि अजित को एनसीपी से निकाला क्यों नहीं?

क्या इस क्वालिटी के 'ट्रोजन हॉर्स' को कभी कोई निकालता है?

घटना विकास किसी कॉमिक थ्रिलर की तरह इतना तेज और मजेदार दिखा कि एंकर रिपोर्टर चर्चक तक आनंद लेने लगे। शरद-सोनिया-उद्धव की एक से एक सयानी चालों के आगे वे स्वयं नतमस्तक थे!

एक एंकर ने पूछा कि असली चाणक्य कौन? अमित शाह या शरद पवार? और सबने माना कि शरद पवार! शरद पवार! असंभव को संभव करने वाले शरद पवार! शरद के दुश्मन भी मानते रहे कि उनसे अधिक कूट-राजनीतिज्ञ दूसरा नहीं!

एक रोज फिर खबरें तेजी से टूटने लगीं : शिवसेना के एमएलए होटल से अब निकले, कि एनसीपी के एमएलए होटल से अब निकले, कि कांग्रेस के एमएलए होटल से अब निकले। कभी तोड़ा-तोड़ी की अफवाहें गरम होतीं, कभी ठंडी पड़ जातीं कि एनसीपी टूटेगी कि कहीं बीजेपी ही तो न टूट जाएगी! एनसीपी के तीन गायब कि तीस गायब, कि जो गायब थे वे सब शाम तक शरद की शरण में, कि बचा एक वह भी कहां जाएगा और देखा गया कि आखिरी दिन अजित भाई का स्वागत सुप्रिया सुले विधान सौंध में खुशी खुशी कर रही हैं। जिस परिवारवाद को पांच साल से कोसा जा रहा है, उसी ने कथित एंटी परिवारवादियों को धूल चटाई! सब एंकर एक सुर से बोलने लगे कि सुप्रिया सुले ने कमाल किया-कमाल किया, कि शरद ने कठोरता, तो सुप्रिया मृदुता से दिन-रात काम किया, कि 'ट्रोजन हॉर्स' समेत सभी एक एक कर वापस आ गए!

एक एंकर ने फरमाया कि अगर शिवसेना-एनसीपी-कांग्रेस तीन दिन में तय कर लेते तो अजित न जाते। दूसरे ने कहा कि अब भी क्या बिगड़ा है? होगा वही जो शरद चाहेंगे!यही हुआ!

एंकर समझते रहे कि वे ही देश की राजनीति को चलाते हैं। विशेषज्ञ समझते रहे कि वही हैं जो राजनीति की रग-रग पहचानते हैं और कुछ चैनलों में हमेशा 'फिक्स' हरकारे समझते रहे कि वे हर एक को लज्जित कर सकते हैं और कांग्रेस को तो जब चाहे निरुत्तर का सकते हैं, लेकिन अंततः ऐसे सभी तीरंदाज अपना-सा मुंह लेकर रह गए! अंत में उस एक पोस्टर ने उनको समझाया कि यह है 'अबकी बार शिवसेना-पवार-सोनिया की सरकार!

जब 'शिवसेना-पवार-सोनिया की सरकार' बन चली तो एक एंकर ने लाइन दी कि यह 'विचारधारा का अंत' है। सोनिया ने सेक्युलर छोड़ा। शिवसेना ने गोडसे सावरकर छोड़ा। 'प्राग्मेटिज्म' की जय! 'प्रैक्टीकलिटी' की जय! 'व्यवहारवाद' की जय! एक एंकर ने चिंता की कि 'कामन मिनीमम प्रोगाम' में 'सेक्युलर' तो है, लेकिन 'गोडसे-सावरकर' नहीं हैं! क्या शिवेसना ने हिंदुत्व को ही सरेंडर कर दिया है? एक पत्रकार ने मुंडी हिलाई कि हां, फिलहाल ऐसा ही है! भारत की आगामी राजनीति पर इसके दूरगामी असर होने वाले हैं।

इस बीच लोकसभा की बहस में जब डीएमके के सांसद ए. राजा गोडसे के हलफनामे को उद्धृत कर रहे थे तो साध्वी प्रज्ञा ने उनको चीखते हुए टोक दिया कि आप इस तरह से देशभक्तों का नाम नहीं ले सकते। गोडसे प्रज्ञा के लिए 'देशभक्त' हो गए! विपक्ष ने शोर किया कि भाजपा गोडसे को लेकर अपनी पोजीशन साफ करे! तब भी संघ/भाजपा के प्रवक्ता प्रज्ञा के 'गोडसेवाद' को डिफेंड करने चैनलों में आ जुटे और गोडसे की विचारधारा पर 'स्वतंत्र डिबेट' करने की लाइन देने लगे!

लेकिन लोकसभा में विपक्षी सदस्यों और चैनल चर्चाओं में बढ़ते धिक्कार को देख अगले रोज भाजपा के कार्यकारी अध्यक्ष नड्डा ने प्रज्ञा के 'गोडसेवाद' को 'कंडेम' किया और भाजपा की संसदीय समिति की मीटिंगों से भी वंचित करके राजनीतिक क्षति की पूर्ति की!

इसके बाद सबके कैमरे मुंबई के शिवाजी मैदान के शपथ समारोह में तैनात हो गए और मंच पर कौन कहां बैठा, कहां न बैठा, इसकी गणना करते रहे। एंकर डीएमके के स्टालिन के आने से चौंके तो मुकेश अंबानी के सपरिवार आने और फडणवीस के आने से भी चौंके! उद्धव ने छत्रपति शिवाजी महाराज की मूर्ति के चरण छूकर शपथ ली। बाकी छह मंत्रियों ने भी ऐसा ही किया!

इस तरह अपनी राजनीति में 'विचारधारा का अंत' हुआ। यह 'अंत' डेनियल बेल की 1960 की किताब 'द एंड ऑफ आइडियोलोजी' वाला नहीं है, बल्कि इक्कीसवीं सदी वाला कांग्रेसी ब्रांड का देसी 'एंड ऑफ आइडियोलोजी' है!

> इसके बाद सबके कैमरे मुंबई के शिवाजी मैदान के शपथ समारोह में तैनात हो गए और मंच पर कौन कहां बैठा, कहां न बैठा, इसकी गणना करते रहे। एंकर डीएमके के स्टालिन के आने से चौंके तो मुकेश अंबानी के सपरिवार आने और फडणवीस के आने से भी चौंके!

www.readwhere.com

महाराष्ट्र की नसीहतें सुनें माननीय

क्षेत्रीय पार्टियों की हर विजय क्षणिक साबित होती आई है। वजह? वे सत्ता पाते ही बंदरबांट में लग जाती हैं। उनकी हुकूमत का आधार विचार नहीं, व्यक्तिवाद होता है। अपनी प्रशंसा और नरेंद्र मोदी की निंदा से वोट तो मिल सकते हैं, पर सत्ता तभी स्थाई साबित होगी, जब आप जन-कल्याण करेंगे।

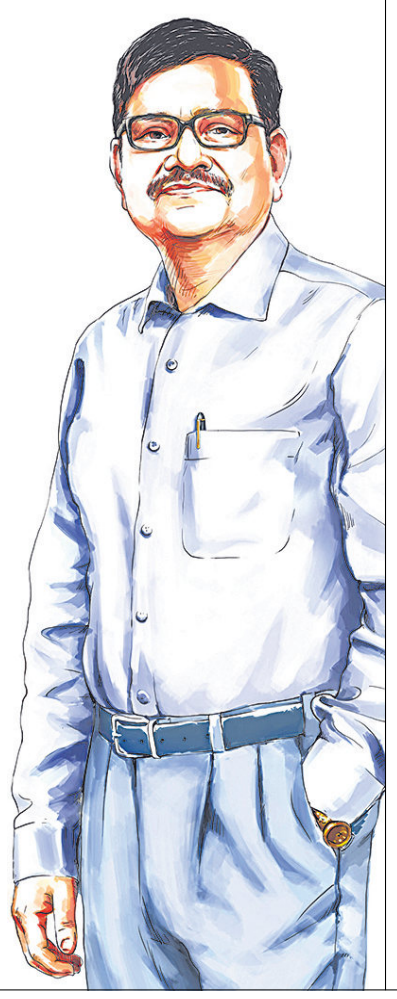

शशि शेखर

आजकल

पुरानी कहावत है। हजार शब्दों की कहानी जो नहीं कह पाती, उसे एक फोटोग्राफ कह देता है। आपका ध्यान ऐसी ही कुछ छवियों की ओर आकर्षित करना चाहूंगा- कुरसी पर विराजे शरद पवार के सामने नतमस्तक शिव सेना प्रमुख उद्धव ठाकरे। विधानसभा एनेक्सी में कभी अजित पवार को, तो कभी आदित्य ठाकरे को गले लगातीं सुप्रिया सुले। इस्तीफे की घोषणा करते सिर्फ 80 घंटे के लिए दोबारा मुख्यमंत्री बने देवेंद्र फडणवीस अथवा सरकार गिरने से कुछ पल पहले तक सदन में बहुमत साबित करने की छाती ठोकते भाजपा के प्रवक्ता। अंततः जनता के सामने दंडवत मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे।

आप चाहें, तो इनमें विरोधाभास ढूंढ़ सकते हैं। तय है, इनमें से हरेक के अर्थ हैं और उनके साथ जुड़े अनर्थों अथवा आशंकाओं का सिलसिला भी। महाराष्ट्र की राजनीति ने सभी के लिए नसीहतों भरा समूचा शब्दकोश रच दिया है।

पहले भाजपा आलाकमान की बात करते हैं। नरेंद्र मोदी और अमित शाह की जोड़ी ने पिछले छह वर्षों में सियासत के तमाम मुखौटे उतारकर रख दिए हैं। ज्यादातर चुनाव तो उन्होंने जीत लिए और जहां न जीत सके, उन्हें भी साम-दाम-दंड-भेद से अपने पक्ष में कर लिया। दूर क्यों जाएं? महाराष्ट्र की तरह हरियाणा में भी 'हंग असेंबली' आई थी। भाजपा को पानी पी-पीकर कोसने वाले दुष्यंत चौटाला कब उसके सहबाला बन गए, पता न चला। महाराष्ट्र के लिए कांग्रेस और एनसीपी, शिव सेना के साथ साझा कार्यक्रम तैयार करने में मगजपच्ची ही कर रही थी कि एक ट्वीट ने उनकी नींद उड़ा दी। आंखें मलते हुए उन्होंने पाया कि देवेंद्र फडणवीस को दोबारा मुख्यमंत्री बनने की बधाई दी जा रही है। इस बार अजित पवार देवेंद्र फडणवीस के साथ सहचर की भूमिका में थे। भाजपा इससे पहले गोवा, मणिपुर, बिहार और हरियाणा आदि जगहों पर यही प्रयोग सफलतापूर्वक कर चुकी थी।

शरद पवार और उद्धव ठाकरे के लिए यह अप्रत्याशित था, पर वे डटे रहे। 24 घंटे के भीतर यह तय हो गया कि राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के असली हकदार सिर्फ और सिर्फ शरद पवार हैं। मराठा क्षत्रप ने एक बार फिर साबित कर दिया कि जमीनी जंग के मामले में वह बेजोड़ हैं। अब जब उद्धव ठाकरे शपथ ले चुके हैं, तो यकीनन भाजपा के कर्णधारों को लग रहा होगा कि उन्हें अपनी पुरानी रणनीति समय रहते बदल देनी चाहिए थी।

तय है। भगवा दल को आने वाले दिनों में कुछ असुविधाजनक सवालों का सामना करना पड़ सकता है। मसलन, झारखंड में चुनाव चल रहे हैं। क्या मुंबई के घटनाक्रम का असर उन पर पड़ेगा? उसके तुरंत बाद दिल्ली और बिहार में चुनाव होने हैं। जनता दल(यू) अभी तक एनडीए का सदस्य है, पर पिछले विधानसभा चुनाव में नीतीश कुमार ने भाजपा को अंगूठा दिखा दिया था। क्या अब वह पहले से अधिक अपरिहार्यता साबित नहीं करेंगे? राजनीति में अपरिहार्यता का अर्थ अधिक मोल-तोल होता है।

अब आते हैं 'महा विकास अघाड़ी' के सूरमाओं पर। लगातार हार के बाद छोटी-सी जीत भी जरूरत से ज्यादा सुकून देती है। अघाड़ी में उल्लास का वातावरण है, पर वे भूलें नहीं कि शिव सेना, एनसीपी और कांग्रेस की शाखें एक-दूसरे से भले मेल-मिलाप दिखाती नजर आएं, लेकिन उनकी जड़ों यानी जमीनी कार्यकर्ताओं को मिलाना मुश्किल होगा। बगल के कर्नाटक में कुमारस्वामी सरकार का जो हश्र हुआ, उसे उद्धव ठाकरे को हर क्षण याद रखना होगा। इसी तरह, पिछले लोकसभा चुनावों में उत्तर प्रदेश में अखिलेश और मायावती तो गले लग लिए, पर कार्यकर्ताओं के मन न मिल सके। महागठबंधन के धराशाई हो जाने में इस विरोधाभास का बड़ा योगदान था। ऐसे में, सवाल उठना स्वाभाविक है- शिव सेना के सुप्रीमो के तौर पर उद्धव ठाकरे का जो चाल, चरित्र और चेहरा था, उसे बरकरार रखते हुए वह नए दोस्तों के साथ तालमेल बैठा पाएंगे? मंत्रिपरिषद की पहली बैठक के बाद आयोजित पत्रकार वार्ता में छगन भुजबल ने जैसे उन्हें 'ओवर पावर' करने की कोशिश की, वह संयोग था या पूर्वाभास? आहत भाजपा की नजर उनकी सरकार के ऐसे विभेदों पर बनी रहेगी।

ठाकरे ने चक्रव्यूह का सिर्फ पहला चक्र पार किया है। अगले पांच साल बने रहने के लिए उद्धव को कड़ी मशक्कत करनी है। यदि वह ऐसा कर सके, तो मौजूदा सियासी महाभारत में उनकी भूमिका अर्जुन की होगी। न कर सके, तो अभिमन्यु की नियति उनकी प्रतीक्षा करती मिलेगी।

महाराष्ट्र एक नसीहत राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी और तमाम क्षेत्रीय पार्टियों को भी दे रहा है। उनकी हर विजय क्षणिक साबित होती आई है। वजह? वे सत्ता पाते ही बंदरबांट में लग जाती हैं। उनकी हुकूमत का आधार विचार नहीं, व्यक्तिवाद होता है। अपनी प्रशंसा और नरेंद्र मोदी की निंदा से वोट तो बटोरे जा सकते हैं, पर उससे उपजी सत्ता तभी स्थाई साबित होगी, जब आप जन-कल्याण करेंगे। विकास अघाड़ी अपना नाम तभी चरितार्थ करेगी, जब महाराष्ट्र का जन-मन इससे लाभान्वित होगा।

यहां एक सबक कांग्रेस के लिए भी है। पिछले लोकसभा चुनावों में 11 करोड़, 90 लाख से ज्यादा वोट पाने के बावजूद राहुल गांधी ने अध्यक्ष पद ठुकरा दिया था। यदि राहुल पहले की तरह सक्रिय होते, तो यकीनन वह सर्वाधिक सुर्खियां बटोर ले गए होते। राजनीति अगर हताश करती है, तो जिलाए रखने का जतन भी करती चलती है। हरियाणा के बाद महाराष्ट्र ने साबित कर दिया है कि देश का मतदाता विपक्ष को भी जिंदा रखना चाहता है, पर इसके लिए कुछ जिजीविषा तो जिम्मेदार पार्टियों के नेताओं को भी दिखानी होगी।

चलते-चलते सर्वोच्च सांविधानिक पदों पर आसीन महानुभावों से एक अनुरोध। महाराष्ट्र में देवेंद्र फडणवीस ने जिस तेजी और तरीके से सत्ता संभाली थी, उससे तमाम सवाल उठ खड़े हुए थे। महामहिम गण कुछ भी करने से पहले हर हाल में ध्यान रखें कि काल आपको ठंडी नजरों से निहार रहा है। इंसान रुखसत हो जाते हैं, पर इतिहास उनकी खोज-खबर अनंत काल तक लेता रहता है।

@shekharkahin

@shashishekhar.journalist

चित्रांकन: डी. श्रीनिवास

वो लम्हा

ह्वेन त्सांग
चीनी विद्वान तीर्थयात्री

हठ के आगे फीके पड़े पकवान

फलों ने पूरे कक्ष को खुशहाल कर रखा था, लेकिन वहीं बैठे बौद्ध भिक्षु के चेहरे पर खुशी का एक कतरा न था। वह निर्विकार बैठे थे। दो दिन बीत गए थे, मुंह से कुछ भी नहीं लगाया, न एक घूंट, न एक कौर। बाहर पूरे नगर में चर्चा थी कि राजा के विरुद्ध भिक्षु ने सत्याग्रह ठान लिया है।

मनोज सिन्हा

मीठे-रसीले संतरे की खुशबू से पूरा कक्ष महक रहा था। वहां एक से एक उम्दा सजीले-सुस्वाद फल सजे थे, सब बारी-बारी लाए गए थे। जब भी किसी ताजे फल से भरा कोई नया फलदान आता, कमरे की हवा में एक नई चाहत घुल जाती, कुछ देर खूब इठलाती और फिर सारे फल मिलकर खुशबुओं की नई दुनिया गढ़ लेते। फलों ने पूरे कक्ष को खुशहाल कर रखा था, लेकिन वहीं बैठे बौद्ध भिक्षु के चेहरे पर खुशी का एक कतरा न था। सारे फल उन्हीं के लिए परोसे जा रहे थे, लेकिन वह निर्विकार बैठे थे। दो दिन बीत गए थे, मुंह से कुछ भी नहीं लगाया, न एक घूंट, न एक कौर।

बाहर पूरे नगर में चर्चा थी कि राजा के विरुद्ध भिक्षु ने सत्याग्रह ठान लिया है, अन्न-जल त्याग दिया है। चीन के तुरफान का राजा जू वेंतई भी बहुत हठी था, उसने दो दिन पहले ही उस भिक्षु से आग्रह किया था, 'मैं अपने राज्य में आपको पाकर धन्य हूं। मेरे राज्य के लोग बड़े अज्ञानी हैं, आप यहीं रहिए और सबको शिक्षित कीजिए। मेरे आश्रय में आपको कोई तकलीफ नहीं होगी।' भिक्षु ने निवेदन किया, 'मेरा ज्ञान अभी अधूरा है, मैं ज्ञान की खोज में निकला हूं। मुझे तथागत बुद्ध के देश जाना है। मैं अभी नहीं रुक सकूंगा। कृपया, मुझे मत रोकिए।'

भिक्षु की गुहार पर राजा कान देने को तैयार न था। उसने फरमान सुना दिया, 'मैं आपको राजपुरोहित बनाऊंगा, आप कहीं नहीं जाएंगे।' भिक्षु तब भी टस से मस न हुआ, तो राजा ने सैनिकों की ओर इशारा किया और कहा, 'आप नहीं मान रहे, तो मुझे रोकने के तरीके आते हैं।'

राजा का फरमान था, भिक्षु की हर इच्छा पूरी करो, लेकिन कहीं जाने मत दो। जल्दी ही राजा को यह भी खबर लग गई कि भिक्षु ने खाना-पीना छोड़ दिया है। नतीजतन एक से एक शानदार फल भिक्षु को परोसे जा रहे थे। राजा ने सुन रखा था कि विद्वान चटोरे होते हैं, भूख बर्दाश्त नहीं करते, तो उसकी पूरी कोशिश थी कि किसी तरह भिक्षु की भूख जग जाए, लेकिन नाकामी हाथ लग रही थी।

ह्वेन त्सांग करीब 15 वर्ष भारत में रहे, लेकिन किसी राजा के करीब जाने का खतरा मोल नहीं लिया। मठों में ही रहे। चीन लौटे, पर तुरफान नहीं गए। चीन के बड़े राज्य गए, लेकिन वहां भी मंत्रिपद ठुकरा दिया।

भिक्षु के सत्याग्रह का तीसरा दिन शुरू हो गया। वह लगातार जमीन पर बैठे रहते। राजा ने भिक्षु के मनुहार में कोई कमी नहीं छोड़ी थी। कमरे में बहुत गद्देदार बिस्तर लगा दिया गया। राजकीय सेवकों ने प्यार से निवेदन किया कि कुछ खाकर आराम कीजिए। कितना बड़ा पद मिल रहा है, लाखों विद्वान इसके लिए पूरी जिंदगी खपा देते हैं और आप ठुकरा रहे हैं?

फिर शुरू हो गई तरह-तरह के पकवानों की आमद। शाही रसोई से भांति-भांति के व्यंजन सज-धज से परोसे जाने लगे। कभी घी की खुशबू, कभी मीठी, कभी तीखी, कभी खट्टी, कभी नमकीन की माया भरमाने लगती, कभी मसालों की तेज गंध उमड़ आती। एक से एक दुर्लभ पकवानों से कमरा अटा पड़ा था। कमरे में खुशबुओं से मतवाली हवा मचल रही थी, पर भिक्षु के मुखमंडल से मानो लोभ-लालसा का नाता ही टूट गया था। वह उस कमरे से दूर कहीं रेगिस्तान में अपनी यादों के साथ थके पड़े थे। एक ओर वह गिरे थे और दूसरी ओर उनका घोड़ा, दोनों तब पांच दिन से भूखे-प्यासे रेगिस्तान में भटक रहे थे। और अभी इस कमरे में तो भूख-प्यास की उम्र महज दो दिन हुई थी। भिक्षु ने अपने मन को उस कमरे से बाहर भेज रखा था। कभी याद करते कि वह बड़े राजा से छिपकर कैसे भागे थे। रात भर चलना और दिन में छिपना। अब इस हठी राजा के जाल में फंस गए। क्या बुद्ध के देश जाने का सपना साकार हो सकेगा? उन्होंने तय कर लिया, मर जाएंगे, लेकिन झुकेंगे नहीं। यह कभी ध्यान नहीं आया कि ऐसी आरामदेह जिंदगी छोड़ आगे वीरान राहों और पराए मुल्कों की खाक क्यों छानी जाए?

तीसरा दिन भी ढल गया। मन दृढ़ रहा, पर जब कमजोरी से शरीर निढाल हुआ, तो भिक्षु ने उसे जमीन पर लेट जाने दिया। लेटते ही खबर फैल गई कि भिक्षु की जान चली जाएगी। राजा के हठ ने घुटने टेक दिए, वह दौड़ता आया और बोला, 'आपकी जान कीमती है, आप कुछ खा लीजिए, मैं आपको रोकूंगा नहीं। लेकिन जब आप लौटना, तब यहीं तीन साल रुक जाना।'

तो ऐसे छूटी भिक्षु ह्वेन त्सांग (602-664) की जान। वह भारत पहुंचे, यहां करीब 15 वर्ष रहे, लेकिन फिर किसी राजा के करीब जाने का खतरा मोल नहीं लिया। मठों में ही रहे। चीन लौटे, पर तुरफान नहीं गए। चीन के बड़े राज्य गए, लेकिन वहां भी मंत्रिपद ठुकरा दिया। मठों में ही रहकर भारत के बारे में लिखते रहे। आज दुनिया की निगाह में वही प्राचीन भारत, कन्नौज, पाटलिपुत्र और नालंदा हैं, जिन्हें ह्वेन त्सांग देखकर गए थे। वह तुरफान राज्य में राजपुरोहित होकर ठहर जाते, तो दुनिया किसे कहती 'तीर्थयात्रियों का राजकुमार'।

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

झूठी प्रेम कहानियों में एक सच्चा किरदार

जीना इसी का नाम है

सुजन मनसी
अमेरिकी सामाजिक कार्यकर्ता

सुजन को पिता पुलिस स्टेशन से छुड़ाकर ले आए, मगर उनके भीतर एक गहरी निराशा उतर आई थी। करीब तीस वर्षों तक उन्होंने अपने थिरेपिस्ट के अलावा किसी से यह दर्द साझा नहीं किया। वह डरी हुई थीं कि उन्होंने मुंह खोला, तो लोग उनके बारे में तरह-तरह की राय बनाने लगेंगे।

जिन समाजों को लेकर दुनिया के तमाम अविकसित और पिछड़े इलाकों के लोग दिन-रात खुशफहमियों का जाल बुनते रहते हैं, उनकी तलछट में भी आदिम प्रवृत्तियों की काई कुछ कम नहीं है। सुजन मनसी जैसे लोग उसी काई को छांटने के लिए अपनी जिंदगी होम कर देते हैं।

लॉस एंजेलिस में पली-बढ़ी सुजन तब उम्र के एक नाजुक मोड़ पर थीं। अमेरिका के खुले माहौल में 15 साल तक आते-आते लड़के-लड़कियों को अनेक सामाजिक वर्जनाओं से मुक्ति मिल जाती है। ऐसे में, सुजन के लिए यह एक तरह से एहसास-ए-कमतरी का मुकाम था कि उनका कोई ब्वॉयफ्रेंड नहीं है। वह अपने दोस्तों को जब भी जोड़े में देखतीं, तो झेंप जातीं। उन्हीं दिनों वह अपने से करीब नौ वर्ष बड़े एक युवक से टकराईं। कुछ मुलाकातों में ही उसने उन्हें यह एहसास दिया कि वह एक खास लड़की हैं। सुजन कहती हैं, 'बेहद सजीला नौजवान था। मुझे अक्सर लंच-डिनर पर ले जाता, तोहफे देता। मैं उसका साथ पाकर खिल उठती थी।'

लेकिन वह शख्स प्रेमी था ही नहीं, वह तो एक जालसाज था। सुजन की नजरों में इस हकीकत का खुलासा जल्द ही हो गया। मगर काफी नाटकीय भावुकता के साथ वह तब तक उन्हें जिस्मफरोशी की दलदल में उतार चुका था। वह न सिर्फ उन्हें शारीरिक रूप से तकलीफें देने लगा, बल्कि मानसिक रूप से भी तोड़ देना चाहता था। एक सुबह जब सुजन सोकर उठीं, तो उनके हाथों में हथकड़ी थी। फिर तो कई महीनों तक वह लगातार उनके जिस्म का सौदा करता रहा और अंततः एक दिन पुलिस जिस्मफरोशी का धंधा करने के आरोप में उन्हें पकड़कर ले गई।

सुजन ने उन पलों में खुद को काफी तन्हा पाया। तब वह 17 की ही तो थीं। उनके पास अपने पिता को बुलाने के अलावा कोई रास्ता न था। पिता उन्हें पुलिस स्टेशन से छुड़ाकर ले आए, मगर सुजन के भीतर एक गहरी निराशा उतर आई थी। अगले करीब 30 वर्षों तक उन्होंने अपने थिरेपिस्ट के अलावा किसी से यह दर्द साझा नहीं किया। सुजन काफी डरी हुई थीं कि अगर उन्होंने मुंह खोला, तो लोग उनके बारे में तरह-तरह की राय कायम करने लगेंगे। काउंसिलिंग और थिरेपी से उन्हें फायदा हुआ। इस बीच उन्होंने स्मिथ कॉलेज से सोशल वर्क में मास्टर की डिग्री हासिल की। क्लिनिकल सोशल वर्कर के तौर पर वर्षों तक काम करने के बाद सुजन ने अपनी दर्दनाक दास्तान एक चर्च-मेंटोर से साझा की। संयोग से वह भी सैन डियागो में यौन-तस्करी की समस्या के लिए कुछ करना चाहते थे।

सैन डियागो अमेरिका के उन दर्जन भर बड़े शहरों में एक है, जहां सबसे ज्यादा यौन-तस्करी के अपराध होते हैं। अपने एक अध्ययन में सैन डियागो यूनिवर्सिटी ने पाया है कि यौन तस्करी का यह काला कारोबार सालाना 80 करोड़ डॉलर से ऊपर का है। अफसोसनाक बात तो यह है कि इसका ज्यादातर शिकार हाईस्कूल की लड़कियां बनती हैं। सुजन ने गौर किया कि इस कड़वी सच्चाई के बावजूद इस समस्या से निपटने के कार्यक्रम गिनती के हैं। वह कहती हैं, 'अचानक मुझे लगा कि ईश्वर ने मेरे त्रासद अनुभव के सकारात्मक इस्तेमाल का रास्ता मुझे दिखा दिया है।'

यौन-तस्करी की शिकार बच्चियों, औरतों को एक सुरक्षित जगह मुहैया कराने के इरादे से साल 2009 में उन्होंने 'जेनरेटहोप' नाम की एक अलाभकारी संस्था शुरू की। इसमें पीड़िताओं को लंबे वक्त तक रहने, काउंसिलिंग, शिक्षा और चिकित्सकीय देखभाल की सुविधा दी जाने लगी, ताकि वे अपनी जिंदगी को एक नई दिशा दे सकें।

इसके बाद तो सुजन ऐसी लड़कियों की मदद के लिए पुलिस विभाग और तमाम दूसरी संस्थाओं के संपर्क में रहने लगीं। अपने अध्ययन में उन्होंने गौर किया था कि यौन-तस्करों की निगाह अमूमन उन अबोध किशोरियों को ढूंढ़ती है, जो प्रेम की तलाश में होती हैं या फिर चकाचौंध के केंद्र में आना चाहती हैं। इन्हें फांसने वाले जालसाज खास तौर से बस स्टॉप और मॉल के चक्कर काटते रहते हैं और जब कभी भी उन्हें मॉल में कोई लड़की स्कूल अवधि में बैग के साथ अकेली दिखती है, वे सब कुछ भांप लेते हैं। वे उन पर अपने पासे फेंकने शुरू करते हैं। सुजन की शब्दावली में यह 'लव बॉम्बिंग' है। दलाल लड़की को यकीन दिला देता है कि उसे उसका बहुत ख्याल है और वह उसकी परेशानियों को समझना चाहता है। यहां तक कि वह लड़की के लिए खाने-पीने की चीजें भी खरीद लाता है, और फिर कुछ ऐसा भेंट करने लगता है, जिससे प्रेम का संकेत मिलता हो। जिस किसी लड़की की जिंदगी में प्रेम की कमी होती है, वह आसानी से उसके जाल में फंस जाती है।

उम्र के छह दशक पार कर चुकीं सुजन यौन-तस्करी का नरक भोग चुकी 100 से ज्यादा लड़कियों और औरतों की जिंदगी में उम्मीद की एक नई रोशनी लेकर आई हैं। उनके इस समर्पण और जज्बे को देखते हुए *सीएनएन* ने उन्हें 'हीरो ऑफ द ईयर' के लिए नामित किया है।

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

जैसी उनको फली

तिरछी नजर

सुधीश पचौरी हिंदी साहित्यकार

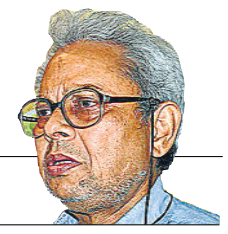

एक दिन हमारे मित्र साहित्य की चर्चा करते-करते अचानक पूछ बैठे- साथी यह बताइए, हिंदी के साहित्यकारों की लंबी उम्र का रहस्य क्या है? कभी साहित्यकार मुश्किल से 40 पार कर जाता था, तो चमत्कार माना जाता था। फिर साठ पार करने लगा, तो अचरज होने लगा। लेकिन इन दिनों तो हिंदी का आम साहित्यकार 80-90 तक पारी खेलता है।

हमने जबाव दिया कि इसमें आश्चर्य लायक कुछ नहीं है। इसका असल कारण साहित्य-कर्म में ही निहित है। वह आज के साहित्य की रचना और आलोचना प्रक्रिया में, साहित्य की निवेश प्रक्रिया से लेकर उसकी इनामी प्रक्रिया में है। आज हिंदी में तीन-चार तरह के प्रतिभाशाली पाए जाते हैं। कुछ 'जन्मजात' किस्म के होते हैं, जैसे कि किसी दल के बड़े नेता या उसके स्नेह-पात्र या सत्ताधारी दल के महासचिव या उसके सत्संगी आदि। ऐसे तमाम महाभाग यथासमय साहित्य के इनामी बनकर प्रख्यात होते हैं और अपने पुण्यों के हिसाब से वक्त पर अकादेमी को प्राप्त होकर इतिहास बनाया करते हैं।

दूसरी कोटि में बहुत 'एंग्री यंग' टाइप आते हैं। कई पत्रकार-कम-साहित्यकार भी इसी कोटि में आते हैं। इनकी ऊपरी उग्रता और भीतरी भीरुता से सब डरते हैं। ऐसी आत्माएं मीडियाप्रेमी, लेकिन विचार-भीरु आचार्यों का आशीर्वाद जल्दी प्राप्त कर लेती हैं और एक दिन मंडी हाउस में माला पहनती दिखती हैं। तीसरे प्रातिभ वे होते हैं, जो किसी बड़े धनाढ्य परिवार के होते हैं। उनकी रचनात्मक प्रतिभा को गुरुदेवों और आचार्यों की पारखी नजरें किसी पांच सितारा में डिनर के दौरान अचानक पहचान लिया करती हैं। फिर वे अखिल हिंदी संसार की चर्चा के केंद्र में आ और छा जाते हैं। ऐसी प्रतिभाएं उचित घड़ी आने पर अकादेमी को भी प्राप्त होती हैं; भले बाद में लोगों को उनका नाम तक याद न रहता हो। कुछ प्रतिभाशाली ऐसे भी होते हैं, जो शुद्ध आधुनिक 'नवध गुरु-भक्ति' से हिंदी साहित्य के सारे सोपान चढ़ते चले जाते हैं। ज्यों-ज्यों वे साहित्य के नाना सोपान चढ़ते जाते हैं, उनकी उम्र लंबी होती जाती है। साहित्य उनके लिए 'सुपर टॉनिक' का काम करता है।

पिछले बीस साल के दौरान हिंदी साहित्यकारों की उम्र का 'रेंडम सैंपल' से प्राप्त 'डाटा' बताता है कि जिसे 30-40 साल की उम्र तक कई 'युवा सम्मान' मिल जाते हैं और साठ की उम्र के आसपास जिसे 'अकादेमी' मिल जाता है, वह गारंटी से 80-90 तक खींच ले जाता है। 'अकादेमी' के बाद जो एकमात्र जिजीविषा लेखक को मरियल या कड़क तरीके से जिलाए रखती है, वह है 'ध्यानपीठ' की कामना। इसीलिए साहित्यकार के बारे में कहा जाता है कि वह हमेशा आशावादी होता है।

लोग समझते हैं कि वह सबको आशा का महान संदेश दे रहा है, जबकि वह सिर्फ एक इनाम की 'आशा' में जीता रहता है। 'कीर्ति' की 'आशा' क्या नहीं कराती? जिन दिनों ऐसी इनामी कमेटियां मिलती हैं, उन दिनों ऐसे कई 'आशावादी' 'एम्स' की राह ले लेते हैं। लेखकों की बीमारी की खबरें हिंदी में आग की तरह फैलती है- 'फलां जी एम्स में भरती'...। ऊपर से हमदर्दी बरसती है, लेकिन अंदर बेदर्दी जमी रहती है, जो कहती है कि देखा, कैसी सिंपेथी-वेव मार रहा है? ऐसी 'सिंपेथी-वेव' को देख कमेटी वाले भी सिंपेथेटिक होकर सोचने लग जाते हैं कि आज अस्पताल में है, कल को उसके संग कुछ ऐसा-वैसा हो गया, तो सोशल मीडिया पर सब हमीं को धोएंगे।

लेकिन हम तो कहते हैं, जैसी उनको फली, वैसी सबकी फले। अपन को तो अवश्य फले।

कार्टून कोना

राजेन्द्र धोड़पकर

दैनिक जागरण

मर्यादित आचरण ही व्यक्तित्व को विस्तार देता है

गंभीर सामाजिक समस्या

राज्यसभा सभापति वेंकैया नायडू ने अश्लीलता के प्रसार को रोकने के लिए सांसदों की एक समिति से कारगर सुझाव देने के निर्देश देकर एक बार फिर एक गंभीर समस्या की ओर देश का ध्यान आकर्षित किया। संचार तकनीक और खासकर मोबाइल फोन के जरिये अश्लीलता का जैसा प्रसार हो रहा है वह केवल संसद ही नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए भी गहन चिंता का विषय बनना चाहिए। इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता कि संचार तकनीक के जरिये फैल रही अश्लीलता ने एक गंभीर सामाजिक समस्या का रूप ले लिया है। यौन अपराध की बढ़ती घटनाओं के पीछे एक बड़ी वजह मोबाइल फोन पर अश्लील सामग्री सहज सुलभ होना है। चूंकि इंटरनेट पर आसानी से रोक-टोक संभव नहीं है इसलिए बच्चों से जुड़ी अश्लील सामग्री भी मोबाइल फोन का हिस्सा बन रही है। हालांकि चाइल्ड पोर्नोग्राफी पर रोक न लग पाने पर पहले भी विभिन्न स्तरों पर चिंता जताई जा चुकी है, लेकिन उससे कुछ हासिल नहीं हुआ। अभी तक करीब चार सौ वेबसाइट्स प्रतिबंधित की गई हैं और कुछ लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गई है। इसमें संदेह है कि इससे बात बनने वाली है।

आज जब हैदराबाद में एक महिला पशु चिकित्सक की दुष्कर्म के बाद हत्या की खौफनाक घटना पर देश भर में आक्रोश व्यक्त किया जा रहा है तब इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि ऐसी घटनाएं बढ़ रही हैं। इसका मतलब है कि यह धारणा सही नहीं साबित हुई कि यौन अपराध निरोधक कानून कठोर कर देने भर से दुष्कर्म की घटनाओं पर लगाम लगाई जा सकती है। महिलाओं और यहां तक कि बच्चियों के साथ दुष्कर्म की तमाम घटनाओं में यह सामने आया है कि अपराधी तत्व मोबाइल पर अश्लील वीडियो देखने के आदी थे। कई मामलों में यह भी सामने आया कि अपराधियों ने दुष्कर्म की घटना का वीडियो बना लिया। कुछ मामलों में तो घटना की जानकारी ही तब हुई जब ऐसे वीडियो सोशल मीडिया पर अपलोड कर दिए गए। आखिर कोई यह क्यों नहीं समझ पा रहा कि सस्ता मोबाइल डाटा अश्लीलता और अपराध का जरिया बन रहा है? अगर यह माना जा रहा है कि सस्ता मोबाइल डाटा ज्ञान के प्रसार में सहायक हो रहा है तो यह एक खुशफहमी ही है। टेलीकॉम कंपनियों की ओर से सस्ती दर पर उपलब्ध कराए जाने वाले डाटा का 80 प्रतिशत इस्तेमाल मनोरंजन करने और साथ ही अश्लील सामग्री देखने में खप रहा है। बेहतर हो कि सस्ते डाटा को महंगा किया जाए। इससे दोहरे लाभ होंगे। एक तो सामाजिक समस्या बन गई अश्लीलता का प्रसार थमेगा और दूसरे टेलीकॉम कंपनियों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा।

स्क्रब टाइफस का आतंक

पश्चिम बंगाल और खासकर कोलकाता के इर्दगिर्द डेंगू के बाद अब एक और बीमारी के डंक से लोग आतंकित हैं। डेंगू से अब तक राज्य में 25 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है और 44 हजार से अधिक लोग पीड़ित हैं। इन सबके बीच स्क्रब टाइफस नामक बीमारी महानगर और कई जिलों के लोगों को चपेट में लेने लगी है। स्क्रब टाइफस से भी अब तक तीन लोगों की मौत हो चुकी है और 40 से अधिक लोग पीड़ित हैं। राज्य के स्वास्थ्य विभाग ने इस रोग को लेकर विभिन्न अस्पतालों के लिए दिशानिर्देश जारी किए हैं। इस बीमारी को लेकर सरकारी अस्पतालों को अलर्ट किया गया है। डॉक्टरों का कहना है कि स्क्रब टाइफस के लक्षण डेंगू से काफी मिलते-जुलते हैं। इसमें शरीर पर लाल चकत्ते हो जाते हैं। डेंगू की तरह स्क्रब टाइफस से पीड़ित मरीज के रक्त में प्लेटलेट काउंट कम होने लगता है। एक हफ्ते के भीतर यदि बीमारी का पता चल जाए तो उपचार से पीड़ित जल्द ठीक हो सकता है। यदि देरी हुई तो स्थिति बिगड़ जाएगी और अंग काम करना बंद कर सकते हैं। यदि मरीज का ज्वर कम नहीं हो रहा है तो खून की जांच माइक्रोबायोलॉजी लैब में कराना चाहिए, ताकि बीमारी के बारे में सही जानकारी मिल सके। यह पहला मौका नहीं है जब बंगाल और खासकर कोलकाता के आसपास के इलाकों में स्क्रब टाइफस के मामले सामने आए हैं। पिछले वर्ष भी इससे कई लोग पीड़ित हुए थे। हालांकि तब इसे लेकर बहुत चर्चा नहीं हुई थी।

वहीं स्वास्थ्य विभाग और स्थानीय निकायों के लिए डेंगू पहले से सिरदर्द बना हुआ है, ऐसे में स्क्रब टाइफस का मामला सामने आने के बाद परेशानी और बढ़ गई है। यही वजह है कि स्वास्थ्य विभाग ने सभी अस्पतालों को पांच दिनों से ज्वर पीड़ित प्रत्येक व्यक्ति की डेंगू और स्क्रब टाइफस की जांच कराने की सलाह दी है। बंगाल सरकार ने सरकारी और निजी अस्पतालों को विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिशानिर्देशों पर आधारित चिकित्सा नियमों का सख्ती से पालन करने के लिए कहा है। स्क्रब टाइफस की मौजूदा स्थिति व लगातार हो रहे संक्रमण से निपटने के लिए ठोस कदम उठाने की जरूरत है। अगर ऐसा नहीं हुआ तो कहीं डेंगू की तरह से यह बीमारी महामारी जैसी स्थिति पैदा न कर दे। हालांकि, चिकित्सकों का कहना है कि यह लाइलाज बीमारी नहीं है। घबराने की कोई जरूरत नहीं। सिर्फ स्वच्छता से इस बीमारी पर काबू पाया जा सकता है। ऐसा इसलिए, क्योंकि यह बीमारी पालतू जानवरों के संपर्क में आने से अधिक फैलती है। इसीलिए स्वच्छता पर जोर देकर इन बीमारियों से बचा जा सकता है।

भितरघात की शिकार तो नहीं भाजपा

संजय गुप्त

भाजपा को इस पर चिंतन-मनन करना ही होगा कि मोदी-शाह की कामयाब जोड़ी के रहते उसे राज्यों में अपेक्षित सफलता क्यों नहीं मिल रही है?

आखिरकार उद्धव ठाकरे ने कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के सहयोग से महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री पद पर आसीन होने के बाद विश्वास मत भी हासिल कर लिया। उन्हें बीते हफ्ते ही इस कुर्सी पर बैठना था, लेकिन इसमें देर इसलिए हुई, क्योंकि एक अप्रत्याशित घटनाक्रम के तहत भाजपा के देवेंद्र फड़नवीस ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ले ली। इसकी वजह रही राकांपा के अजीत पवार का गुपचुप रूप से उनके साथ आना। फड़नवीस को मुख्यमंत्री और अजीत पवार को उपमुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाने के लिए बीते शनिवार की सुबह करीब साढ़े पांच बजे राष्ट्रपति शासन हटाया गया। इसके कुछ देर बाद राज्यपाल ने नई सरकार का शपथ ग्रहण करा दिया। यह समाचार सामने आते ही हंगामा मच गया। कांग्रेस, राकांपा और शिवसेना के नेता सुप्रीम कोर्ट पहुंचे। सुप्रीम कोर्ट ने फड़नवीस सरकार को बुधवार को बहुमत साबित करने का निर्देश दिया। इसके एक दिन पहले ही अजीत पवार ने इस्तीफा दे दिया। इसके बाद फड़नवीस को भी ऐसा करने के लिए मजबूर होना पड़ा। ऐसा कुछ होने के आसार तभी उभर आए थे जब राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के ज्यादातर विधायक अजीत पवार का साथ छोड़कर शरद पवार के पास चले गए थे। आखिर में खुद अजीत पवार ने भी घर वापसी कर ली।

अजीत पवार ने जिस तरह कुछ ही घंटों के अंदर घर वापसी की और वहां उनका जैसा स्वागत हुआ उससे यही लगता है कि वह ऐसी किसी राजनीतिक साजिश का हिस्सा थे जिसका मकसद भाजपा को गच्चा देकर उसे नीचा दिखाना था। ऐसा लगता है कि भाजपा के खिलाफ राजनीतिक जाल को बुनने का काम विधानसभा चुनाव के समय ही शुरू हो गया था। भाजपा के लिए यह राजनीतिक जाल जिसने भी बुना हो वह अपने मकसद में सफल रहा। भाजपा ने महाराष्ट्र की सरकार से भी हाथ धोया और अपनी साख भी गंवाई। भाजपा के साथ ही मोदी सरकार के लिए इस सवाल का जवाब देना मुश्किल है कि आखिर विशेष नियम का इस्तेमाल करते हुए गुपचुप रूप से राष्ट्रपति शासन हटाने की क्या जरूरत थी? ध्यान रहे इस नियम का इस्तेमाल अपवाद स्वरूप और असामान्य परिस्थितियों में किया जाता है। भाजपा के पास इस सवाल का भी जवाब नहीं कि सुबह इतनी जल्दी शपथ लेने की क्या जरूरत थी? क्या उसे यह भय था कि कहीं कांग्रेस और राकांपा शिवसेना के पक्ष में राज्यपाल को समर्थन पत्र न सौंप दें? सच्चाई जो भी हो, इन सवालों ने भाजपा को असहज करने का ही काम किया है।

यह सही है कि शिवसेना ने भाजपा के साथ धोखा किया, लेकिन उसे इसका आभास पहले से होना चाहिए था कि चुनाव नतीजे के बाद वह उससे छिटक सकती है। महाराष्ट्र के चुनाव नतीजे यही कह रहे थे कि सरकार फड़नवीस के नेतृत्व में ही बननी चाहिए, लेकिन शिवसेना बारी-बारी से मुख्यमंत्री बनाने पर अड़ गई। ऐसा पहले भी हो चुका है। 1999 में भाजपा बारी-बारी से मुख्यमंत्री के फार्मूले पर जोर दे रही थी, लेकिन तब शिवसेना इसके लिए उसी तरह तैयार नहीं हुई जैसे इस बार भाजपा नहीं हुई। इसका फायदा कांग्रेस और राकांपा ने उठाया। दोनों एक-दूसरे के खिलाफ चुनाव लड़े थे, फिर भी सत्ता के लिए एक साथ आ गए। यह गठजोड़ लंबा चला और करीब 15 साल तक शिवसेना को सत्ता में आने का मौका नहीं मिला। 2014 का विधानसभा चुनाव दोनों दलों ने अलग होकर लड़ा। भाजपा को शिवसेना के मुकाबले कहीं ज्यादा सीटें मिलीं। वह मजबूरी में भाजपा सरकार को समर्थन देने को तैयार हुई। इसके बाद उसने भाजपा को जली-कटी सुनानी शुरू कर दी। यह सिलसिला लोकसभा चुनाव तक चलता रहा। अमित शाह के मनाने पर वह लोकसभा चुनाव मिलकर लड़ने को तैयार हुई। यह मेल-मिलाप विधानसभा चुनाव में भी बना रहा, लेकिन शायद शिवसेना भाजपा को बड़े भाई की भूमिका में देखने को तैयार नहीं थी और इसीलिए चुनाव बाद वह उससे छिटक गई। उसकी छटपटाहट समझ आ रही थी, लेकिन यह नहीं माना जा रहा था कि वह सत्ता के लिए अपनी विचारधारा को ताक पर रखकर अपनी कट्टर विरोधी कांग्रेस और राकांपा से हाथ मिलाना पसंद करेगी। उसने ऐसा ही किया। शिवसेना जिस तरह अपने विरोधी दलों के साथ गई उससे भारतीय राजनीति के अवसरवादी चरित्र की ही पुष्टि हुई। अगर बाल ठाकरे जिंदा होते तो शायद यह सब नहीं हुआ होता। जो भी हो, महाराष्ट्र के राजनीतिक घटनाक्रम ने यही दिखाया कि राजनीतिक दल जनादेश का मनमाना इस्तेमाल करने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं।

कायदे-कानून से और साथ ही राजनीतिक नैतिकता के हिसाब से महाराष्ट्र में सरकार भाजपा-शिवसेना की ही बननी चाहिए थी, क्योंकि जनादेश इसी गठबंधन के पक्ष में था। इस जनादेश को ठेंगा दिखा दिया गया। जाहिर है कि इससे वे लोग खुद को ठगा महसूस कर रहे होंगे जिन्होंने भाजपा-शिवसेना सरकार बनाने के मकसद से वोट दिए। जब जनादेश की ऐसी अनदेखी होती है तो इससे लोकतंत्र का उपहास उड़ता है और छल-कपट की राजनीति को बल मिलता है। इस राजनीति को खत्म करने की जरूरत है, लेकिन यह काम तभी होगा जब सभी राजनीतिक दल मिलकर गठबंधन राजनीति के नियम-कानून तय करेंगे। फिलहाल इसके आसार नहीं हैं।

महाराष्ट्र में ठाकरे सरकार के सत्तारूढ़ होने के साथ ही एक और राज्य भाजपा के हाथ से निकल गया। यह तब हुआ जब प्रधानमंत्री मोदी और अमित शाह भाजपा की राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्यता बढ़ाने में कामयाबी हासिल कर रहे हैं। इस कामयाबी का कारण प्रधानमंत्री मोदी की ओर से पांच साल तक एक साफ-सुथरी सरकार चलाना और इस दौरान कई बड़े साहसिक फैसले लेना है। दूसरे कार्यकाल में भी यह सरकार साहसिक फैसले लेने में लगी हुई है। दूसरे कार्यकाल का सबसे बड़ा साहसिक फैसला अनुच्छेद 370 हटाने का रहा। कुछ समय पहले तक ऐसे किसी फैसले के बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था। यह भी उल्लेखनीय है कि अयोध्या पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला आने के बाद देश में शांति बनी रही। यह किसी उपलब्धि से कम नहीं। ऐसे माहौल में भाजपा को इस पर चिंतन-मनन करना ही होगा कि मोदी-शाह की कामयाब जोड़ी के रहते उसे राज्यों में अपेक्षित सफलता क्यों नहीं मिल रही है? इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि महाराष्ट्र में भाजपा को अपेक्षित राजनीतिक सफलता नहीं मिल सकी। राज्य के कुछ इलाकों में पार्टी के बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद पूरी नहीं हो सकी। कहीं ऐसा तो नहीं कि भाजपा के नेता ही मोदी-शाह की जोड़ी को नुकसान पहुंचाने के लिए भितरघात करने में लगे हों? यह वह आशंका है जिससे इन्कार नहीं किया जा सकता। वैसे भी अपने देश की राजनीति में सब कुछ संभव है।

response@jagran.com

अवधेश राजपूत

प्याज महाराज की मनुहार

हास्य-व्यंग्य

सूर्यकुमार पांडेय

हे सब्जीअधीश्वर, हम तुम्हारी शरण में हैं। हमारी ढीली होती जेब पर कृपा करो और जायके को तृप्त करो

हे भारत भूमि के भोले-भाले भले मानुसों के घर का बजट बिगाड़ने वाले, उच्च बाजार-भाव के मामले में समस्त सब्जियों को पछाड़ने वाले, निर्धन और मध्यवर्गीय जनता की जमी-जमाई गृहस्थी को हिलाने वाले, महंगाई की पीठ पर बैठकर दहाड़ने वाले, अपने दिव्य छिलकायित स्वरूप के ही समान आम आदमी की परत-दर-परत बखिया उधेड़ने वाले और तमाम तरकारियों के तन-बदन पर अपनी दबंग हैसियत का झंडा गाड़ने वाले, बू-धारक, जेब मारक, चमत्कार कारक, हे प्याज महाराज! तुम्हें अनंत बार नमस्कार है। बारंबार नमस्कार है।

हे महाराज! जो रिश्ता एक मुनाफाखोर का ब्याज से, आगरा का ताज से, अस्पताल का इलाज से, गौरैया का बाज से, आसमान का हवाई जहाज से, कार का गैराज से, नदियों का बैराज से, गवैये का रियाज से, मांझे का पतंगबाज से, ब्यूटी पार्लर का मसाज से, आलसी का कामकाज से, चूहे का अनाज से, नवयौवना का लोकलाज से, दशानन का रामराज से और आत्मकेंद्रित व्यक्ति का समाज से है, वही रिश्ता एक आम आदमी का प्याज से है। इन सहज संबंधों के ध्वस्तकारक, नित्य नवल उच्च दर विहारक, हृदयविदारक हे प्याज महाराज! तुम्हें असंख्य बार नमस्कार है। बारंबार नमस्कार है।

हे अपना नाम स्वयमेव शतकवीर धरने वाले, महंगाई के सभी पुराने कीर्तिमानों को तहस-नहस कर नया रिकॉर्ड कायम करने वाले, दूर रहकर हाथ लगाए और छीले बिना ही हर किसी की आंख में आंसू भरने वाले, किसी चतुर-सुजान नेता की मानिंद आज की तारीख में कल के किए हुए अपने ही वादे से मुकरने वाले, हद की सरहद के पार के भी उस पार से गुजरने वाले, अपने लच्छेदार शरीर के माफिक हमारे नोटों को लच्छा-लच्छा कुतरने वाले और बाजार की कीमतों के एवरेस्ट पर चढ़कर नीचे न उतरने वाले, सलाद संहारक, उधार कारक, गृहदशा बिगाड़क, हे प्याज महाराज! तुम्हें अनगिनत बार नमस्कार है।

हे गोलमटोल तनधारी, नखराकारी, एक गरीब ने तुम्हें हाथ लगाना चाहा, उसे बिजली जैसा करंट लगा। एक मजदूर ने दुकानदार से तुम्हारा भाव क्या पूछ लिया, उस सब्जी वाले के चरणों में गिरकर वहीं पर संज्ञाशून्य हो गया। टमाटर और अन्य फल-सब्जियां निरंतर तुम्हारा पीछा कर रही हैं, मगर तुम्हें छू पाना तो दूर, वे तुम्हारे भाव के आसपास तक पहुंच पाने को तरस रही हैं। तुमको जिस किसान ने अपना खून-पसीना एक समझकर रात-दिन की कड़ी मेहनत से उगाया, तुमने उसके भी होंठों से लगने से इन्कार कर दिया। बेचारे सेब तक को सलाद के रूप में कटना पड़ रहा है और तुम दूर खड़े होकर अट्टहास कर रहे हो। किचन के उपहासक, सब्जी बाजार और मंडी के विकट विनाशक, हे प्याज महाराज! तुम्हें कोटि-कोटि नमस्कार है। हे देव, तुम्हारे अनेक रूप हैं। आयात में भी तुम हो। निर्यात में भी तुम हो। गंध में भी तुम ही। संबंध में भी तुम ही हो। तुम बारहमासी हो। तुम नासिक से नासिका तक के निवासी हो। आपकी महिमा अपरंपार है।

हे सब्जियों के अधीश्वर, हम तुम्हारी शरण में आए हैं। हमारी ढीली होती जेब पर अपनी कृपा। हमारे घर पधारो और हमें सस्ती उपलब्धि का आशीर्वाद प्रदान करो। तुम्हारी महिमा गाने की क्षमता हमारी सामर्थ्य से बाहर है। तुम इन दिनों सर्वत्र समाचार में हो। आजकल तुम ही जन-जन की जिह्वा पर विराजमान हो। अब आओ और हमारी जिह्वा पर साक्षात अपने चरण धरो। हे गंध देव, हम तुम्हारी सौगंध खाते हैं कि हमारी रसोई का एकमात्र अवलंब तुम ही हो। तुम्हारे बिना स्वाद की कल्पना भी निरर्थक है। तुम रोटी के साथ गठबंधन कर दीन-दुखियों को क्षुधातृप्ति देने वाले अनादि देव हो। तुम बर्गर आदि फास्ट फूड के मध्य अवस्थित होकर युवा पीढ़ी को अनंत ऊर्जा प्रदान करने वाली महाशक्तियों में वरेण्य हो। शंख स्वरूप, शाक-सब्जियों के भूप, दोप्याजा सुशोभक, छौंक बघारक, कर्णशूल हारक हे प्याज देव! तुम्हें शत-शत नमस्कार है। बारंबार नमस्कार है। प्रभु अब तो आपकी महिमा इतनी बढ़ गई है कि हीरों के शहर में भी चोर हीरे लूटने के बजाय आपसे भरी एक बोरी चुराकर भागने में ही ज्यादा भलाई समझने लगे हैं।

response@jagran.com

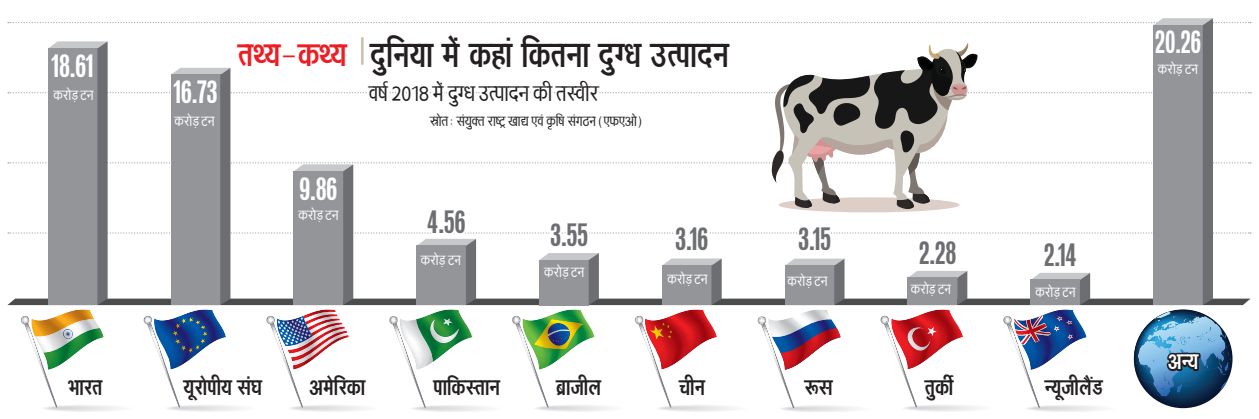

ऊर्जा

भक्ति मार्ग

समस्त ब्रह्मांड में विद्यमान ईश्वरीय चेतना से एकाकार होने को ही योग कहते हैं। इससे मनुष्य अपने मन को स्थिर करके आत्म-साक्षात्कार के माध्यम से मोक्ष प्राप्त कर सकता है। सनातन धर्म ग्रंथों में विभिन्न प्रकार के योग बताए गए हैं। जैसे ज्ञान योग, कर्म योग तथा भक्ति योग। ये सभी मार्ग ईश्वर चेतना तक पहुंचने के साधन हैं! ज्ञान योग में उपासक अपनी ज्ञानेंद्रियों को अंतर्मुखी मांग बनाकर निर्गुण ब्रह्म से जुड़ने का सीधा प्रयास करता है! यह काफी कठिन मार्ग है। ऐसे में स्वाभाविक है कि इसमें भटकाव की आशंकाएं भी अधिक होती हैं!

भक्ति मार्ग पर चलने वाला मनुष्य अपनी सारी व्यथा अपने आराध्य देव को सुनाकर स्वयं अपने हृदय में हितकारी सलाह का अनुभव करता है! इस प्रकार वह अपने आराध्य देव रूपी संरक्षक की देखरेख में अपनी जीवन यात्रा पूरी करता है! इसमें सफलता प्राप्ति की प्रचुर संभावनाएं होती हैं! सर्वविदित है सभी योग मार्गों का एकमेव लक्ष्य परम ब्रह्म की प्राप्ति ही है। इसी कड़ी में भक्ति मार्ग पर चलने वाला भक्त भी काम, क्रोध, लोभ और मद आदि विकारों की सेना पर विजयश्री का वरण कर आखिर में समस्त ब्रह्मांड के कण-कण में व्याप्त निरंकार ब्रह्म से ही जुड़ जाता है। इसमें एक महत्वपूर्ण बिंदु यही है कि सीधे ज्ञान मार्ग पर चलने वाले मनुष्य को उस प्रकार का सहारा नहीं मिलता जैसा एक भक्त को अपने आराध्य देव के रूप में प्राप्त होता है! सांसारिक जीवन में तमाम ऐसे अवसर आते हैं जब हमारी इंद्रियां हमें भटकाव की ओर उन्मुख करती हैं। ऐसी स्थिति में हमारे आराध्य में आस्था और विश्वास एवं उनसे जुड़े मूल्य ही हमें सही पथ पर आबद्ध रखते हैं। ऐसी स्थितियों में भक्ति मार्ग ही हमारी हिचकोले खाती नैया का बेड़ा पार लगाता है।

इस समूचे विवरण से स्पष्ट है कि प्रत्येक मनुष्य के लिए यह श्रेयस्कर होगा कि वह अपनी दिनचर्या में ईश्वर भक्ति को शामिल करे। इस प्रकार ईश्वरीय चेतना सदैव उसके साथ रहती है। यही चेतना उसे इंद्रिय भोग के दुष्प्रभावों से बचाते हुए जीवन में सफलता दिलाती है।

कर्नल शिवदान सिंह

मिसाल बने अनोखे पुल

मुकुल व्यास

मेघालय में उफनती नदियों को पार करने के लिए रबर की जड़ों से बने टिकाऊ पुल आधुनिक वास्तुशिल्प का हिस्सा बन रहे हैं

पूर्वोत्तर के राज्य मेघालय में घने जंगल, दुर्गम घाटियां और बीहड़ हैं। यहां की छोटी-छोटी पहाड़ी नदियां मानसून के दौरान उफनती रहती हैं। बारिश की अधिकता के चलते यहां लकड़ी के पुल बहुत जल्द गलने लगते हैं या बह जाते हैं। स्टील और कंक्रीट से बने पुलों की भी सीमाएं हैं, लेकिन जिंदा पेड़ों की जड़ों से बनाए गए पुल सदियों तक चल सकते हैं। म्यूनिख की टेक्निकल यूनिवर्सिटी (टीयूएम) के प्रो. फर्डिनांड लुडविग ने इन अनोखे पुलों के अध्ययन के बाद इस असाधारण कला को आधुनिक वास्तुशिल्प में शामिल करने का सुझाव दिया है।

राज्य की इन उफनती हुई नदियों को पार करने के लिए स्थानीय खासी और जयंतिया आदिवासियों ने रबर पेड़ की जीवित जड़ों से पुल बनाए हैं जो बेहद मजबूत और टिकाऊ हैं। टीयूएम में लैंडस्केप आर्किटेक्चर के प्रोफेसर लुडविग का कहना है कि 'फाइकस इलास्टिका' नामक पेड़ की जड़ों से बने इन पुलों की लंबाई 50 मीटर तक पहुंच सकती है और ये सैंकड़ों वर्षों तक टिके रह सकते हैं। उन्होंने जर्मनी की यूनिवर्सिटी ऑफ फ्राइबर्ग में वनस्पतिशास्त्र के प्रोफेसर थॉमस स्पेक के साथ मिलकर ऐसे 74 पुलों का विश्लेषण किया है। लुडविग के अनुसार इन पुलों की काफी हुई है, लेकिन इनकी वैज्ञानिक पड़ताल बहुत कम हुई है। टीयूएम में वास्तुशिल्प विभाग के प्रोफेसर विलफ्रिड मिडलटन का कहना है कि पारंपरिक खासी निर्माण तकनीकों के बारे में अभी तक लिखित रूप से ज्ञान उपलब्ध नहीं था।

शोधकर्ताओं ने इन पुलों की निर्माण प्रक्रिया को बेहतर ढंग से समझने के लिए पुल निर्माताओं से विस्तृत बातचीत की। उन्होंने इन जटिल संरचनाओं के हजारों फोटो खींचे जिनके आधार पर पुलों के थ्री डी मॉडल तैयार किए। शोधकर्ताओं के दल ने पहली बार इन पुलों की जगहों के नक्शे भी तैयार किए। पुलों के निर्माण की प्रक्रिया वृक्षारोपण से आरंभ होती है। स्पेक ने बताया कि पुल बनाने वाला व्यक्ति नदी के किनारे या बीहड़ के छोर पर फाइकस इलास्टिका का पौधा लगाता है। धीरे-धीरे यह पौधा बाहरी जड़ें विकसित करने लगता है।

इन जड़ों को बांस या पाम के तनों से बने ढांचे में बुना जाता है। इन्हें नदी के ऊपर दूसरे किनारे की तरफ बढ़ने के लिए निर्देशित किया जाता है। इन 'हवाई' जड़ों के दूसरे किनारे पर पहुंचने के बाद उन्हें रोप दिया जाता है। ये जड़ें छोटी-छोटी जड़ें विकसित करती हैं। इन जड़ों को भी किनारे की तरफ मोड़ कर रोप दिया जाता है। पौधे की निरंतर वृद्धि और जड़ लपेटने की तकनीकों के उपयोग से फाइकस इलास्टिका की जड़ें जटिल संरचनाओं में बदल कर टिकाऊ और सुरक्षित पुलों का निर्माण करती हैं। नई स्फुटित होने वाली जड़ें मौजूदा ढांचे में निरंतर रूप से जुड़ती रहती हैं। इन जीवित पुलों को पूरा करने में कई दशक लग जाते हैं। निर्माण प्रक्रिया में अक्सर कई पीढ़ियां शामिल होती हैं। प्रो. लुडविग का कहना है कि खासी लोगों की पारंपरिक तकनीकों के बारे में नए अध्ययन से आधुनिक वास्तुशिल्प के विकास को बढ़ावा मिल सकता है।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

राजरंग

शिष्टाचार में भी सियासत

चुनावी माहौल में विरोधी राजनीतिक दलों के खेमों में तल्खी अपने चरम पर होती है। फिर भी यह देखना बहुत रोचक होता है कि आम कार्यकर्ताओं में तनातनी के बावजूद शीर्ष नेता बड़े सौहार्द के साथ एक दूसरे से मेल-मुलाकात करते हैं। यह सब आम जनता से नजरें छिपाकर किया जाता है। ऐसी मुलाकातों के लिए सबसे माकूल स्थान होता है हैलीपैड। दरअसल चुनावी दौर में लगभग हर बड़े नेता रोजाना सुबह हेलीकॉप्टर लेकर निकलते हैं। विधानसभा चुनावों के सिलसिले में इन दिनों झारखंड में रैलियों का जोर है। ऐसे ही एक दिन जब झामुमो के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार हेमंत सोरेन हवाई अड्डा पहुंचे तो वहां मौजूद भाजपा के कुछ सांसद और विधायक खड़े हो गए। वैसे तो यह शिष्टाचार था, लेकिन राजनीतिक बढ़त बनाने के लिहाज से हेमंत ने कहा-अरे अभी से खड़े मत होइए, वक्त आने दीजिए। तत्काल भाजपा नेताओं को अहसास हुआ कि सोरेन शिष्टाचार में भी सियासी दांव लगा गए और वे तुरंत उठ खड़े हुए।

खा गए मात

एक कहावत है कि दूर के फायदे के लिए नजदीकी लाभ को अनदेखा किया जाता है, लेकिन अगर इस चक्कर में कोई बड़ा मुद्दा ही पीछे छूट जाए तो वापसी के लिए बड़ी जद्दोजहद करनी पड़ती है। कांग्रेस के साथ भी बीते दिनों कुछ ऐसा ही हुआ। गोडसे को देशभक्त कहने के विवाद पर भाजपा सांसद साध्वी प्रज्ञा के माफी मांगने से एक दिन पहले सुबह से ही कांग्रेस लोकसभा में विरोध के लिए तैयार थी। प्रश्नकाल शुरू होते ही कांग्रेस ने इसका विरोध जताना शुरू किया। स्पीकर की ओर से ज्यादा तवज्जो नहीं मिलने पर कांग्रेस ने तुरंत सदन से बहिष्कार कर दिया। पूरा मामला पांच मिनट में ही निपट गया और उसके बाद पूरा प्रश्न काल हुआ, लेकिन कांग्रेस के कुछ रणनीतिकारों ने इसे सदन में पार्टी के नेता की कमजोर रणनीति बताया। शायद यही वजह रही कि अगले दिन पार्टी को इस मामले में पूरी ताकत दिखानी पड़ी जिसके बाद भाजपा सांसद को दो बार माफी मांगनी पड़ी।

गुरु-चेले का खेल

राजनीति में अपने गुरु को ही पटखनी देने के किस्से इन दिनों सियासी गलियारों में खासे चर्चा का विषय हैं। वजह स्वाभाविक तौर पर अजीत पवार का अपने चाचा और राजनीतिक गुरु शरद पवार को दिया झटका है। भतीजे ने जिस तरह गच्चा दिया उसके बाद सियासत के ऐसे पुराने किस्सों की खूब चर्चा है। संसद के गलियारे में चंद्रबाबू नायडू से जुड़ी एक मिसाल का जिक्र करते हुए सांसदों की एक टोली ने भाजपा के राज्यसभा सदस्य सीएम रमेश पर व्यंग्य-बाण चलाए। दरअसल रमेश ने भी लोकसभा चुनाव के बाद अपने राजनीतिक गुरु चंद्रबाबू नायडू को गच्चा देते हुए चार राज्यसभा सांसदों को तोड़ भाजपा का दामन थाम लिया। दिलचस्प बात यह थी कि रमेश ने चंद्रबाबू को अपना गुरु तो स्वीकार किया, मगर यह भी कहा कि वह गुरु के सियासी उत्तराधिकारी थे। मगर बाद में गुरु के इरादे बदल गए और वह अपने बेटे नारा लोकेश को आगे बढ़ाने लगे। ऐसे में गुरु को झटका देने के अलावा भला रास्ता भी क्या था। सियासत में गुरु और चेले के खेल की कहानियों का सार यही है कि समय रहते अगर दोनों में से कोई एक दूसरे का सियासी इरादा सही समय पर नहीं भांप पाया तो राजनीतिक बत्ती गुल होनी तय है।

उम्मीद से ज्यादा

बंगाल की तीन विधानसभा सीटों पर उपचुनाव के नतीजे आने के एक दिन पहले संसद भवन में तृणमूल सांसद पत्रकारों से बात कर रहे थे। किसी ने पूछ लिया कि परिणामों को लेकर आपकी क्या उम्मीद है। सांसद महोदय ने कहा कि एक सीट पर हम जीतेंगे और एक सीट भाजपा के खाते में जाएगी। तीसरी सीट किसी भी पार्टी के पाले में जा सकती है, क्योंकि बहुत ही जबरदस्त वोटिंग हुई है। यानी सांसद महोदय को अपनी पार्टी की एक सीट पर जीत को लेकर ही भरोसा था। खैर जिस दिन नजीते आए तो उनका अनुमान एकदम उलट हो गया। तीनों सीटें तृणमूल के खाते में चली गईं। जिस सीट पर भाजपा की जीत तय मानी जा रही थी वहां भी उसे जीत नसीब नहीं हुई। खैर, अगले दिन सांसद महोदय को पत्रकारों ने फिर पकड़ा। तब उनके तेवर एकदम बदले हुए थे। वह बोले कि हमें तो पहले से ही मालूम था कि तीनों पर हमारी जीत होने जा रही है।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

Join Teligram Channel ⤵

🎯 TARGETGOVTJOBS [*Https://t.me/TargetGovtJobs*]

Special :- Daily Update 👉 📰 Newspaper, ✍ Editorial, 📅 Today's History, 📻 Air & BBC News, 📺 RSTV, 📖 The Hindu vocabulary, ☆ Imp. NewsClips, 📺 StudyIQ Video, 📅 Daily, Weekly & Monthly current affairs Magazine, 🔊 Dr. Vijay Agarwal Audio Lectures, 💻 Job update [Employment News Weekly], etc...

📚E BOOKS📚 [*Https://t.me/Edu_Books*]

Special :- Get all important E-Books [NCERT Books, Subject Wise Books, Hand Written notes, Coaching Classes Notes], Weekly & Monthly Current Affairs Magazine, Exam Test Series, Job update, Employment News, Other Magazine etc.... [Medium :- Hindi & English]

📰E-PAPER & MAGAZINE 📰 [*Https://t.me/NewspapersTodaY*]

Special :- Daily Update Newspaper [Hindi & English Language], Magazine, Employment News, Job update, 📻 Air & BBC News, Etc....

🙏 THANKS 🙏